आहमेत ओगुट

जन्म 1981, दियारबाकिर। इस्तांबुल, एम्स्टर्डम और बर्लिन में रहते और काम करते हैं।

जम्प अप! 2022

दर्शकों की उपस्थिति से सक्रिय होने वाली ट्रैम्पोलिन, इस पेशकश के लिए किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के संग्रह की कलाकृतियों को दीवार पर सामान्य ऊँचाई से ऊपर टांगा गया है।

साहा के सहयोग से प्रदर्शित

इस पेशकश में दर्शक भारतीय आधुनिकतावादी कला के उस्ताद बिनोद-बिहारी मुखर्जी की उन कलाकृतियों से रूबरू होंगे जो उन्होंने अपने जीवन के आख़िरी दौर में बनाई थी। जब उनकी आँखों की रौशनी चली गई थी। प्रदर्शित करने के लिए सामान्य ऊँचाई के स्तर पर टांगने के बजाए कलाकार आहमेत ओगुट ने इन कृतियों को और ऊपर टांगा है - एक ऐसी ऊँचाई पर जहाँ से बखूबी काम कर रही आँखों के लिए भी इन कृतियों को ठीक से देख पाना मुश्किल है। म्यूज़ियम और गैलरियों में एक कलाकृति को प्रस्तुत करने के लिए देखने वालों की औसत ऊँचाई का अनुमान लगाया जाता है ताकि यह तय किया जा सके कि चीज़ों को कहाँ लटकाया जाए। इससे कई कलाकृतियाँ बच्चों, व्हीलचेयर इस्तेमाल करने वाले व्यक्तियों आदि की पहुँच से बाहर हो जाती हैं। कलाकार ने इन कलाकृतियों को जिस तरह से टांगने का फ़ैसला किया है, वह कमरे के भीतर एक ऐसा अहसास देता है मानो नज़र के सारे पैमाने बदल गए हैं। न सिर्फ़ यह इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि धरती अपनी जगह से हिल गई है, बल्कि यह राजनीतिक बदलावों और उनके आपसी संबंधों के नतीजे से पैदा होने वाली उथल-पुथल को भी दिखाता है। इन कलाकृतियों को देखते हुए दर्शक एक अभिनेता, एक परफ़ॉर्मर भी बन जाते हैं। इन्हें देखने के लिए उन्हें कूदना पड़ता है, और इस क्रम में भौतिक अनुभवों के ज़रिए सामूहिक रूप से महसूस की गई इतिहास संबंधी यादें जाग उठती हैं।

ओगुट एक सामाजिक-सांस्कृतिक रचनाकार, कलाकार और व्याख्याता हैं। विभिन्न क़िस्म के माध्यमों में काम करते हुए, जिनमें फ़ोटोग्राफ़ी, वीडियो, और इंस्टॉलेशन शामिल हैं, वे अक्सर ही हास्य और नन्ही भंगिमाओं का उपयोग करते हुए गंभीर और/या फ़ौरी सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी टिप्पणी पेश करते हैं। ओगुट नियमित रूप से कला दुनिया के बाहर के लोगों के साथ मिल कर काम करते हैं ताकि समाज के सामूहिक नज़रिए में बदलावों को मुमकिन बनाया जा सके।

डेविड होरविट्ज़

जन्म 1982, लोस एंजेलेस। लोस एंजेलेस में रहते और काम करते हैं।

चेंज द नेम ऑफ़ डेज़, 2021/2023

ज्याँ बोइते एडिशंस एंड इवन लैंबर्ट द्वारा प्रकाशित आर्टिस्ट बुक का पोस्टर संस्करण

म्यूजियम में जगह-जगह पर सत्रह ऐसे पोस्टर दिखाए देते हैं, जो इस दुनिया की अलग तरह से परिकल्पना करने को प्रेरित करते हैं। इन्हें डेविड होरविट्ज़ द्वारा विकसित किए गए बत्तीस पाठों और छोटी शिक्षण इकाइयों में से चुना गया है। होरविट्ज़ एक कलाकार और एक पिता हैं, और उन्होंने अपनी तब पाँच साल की बेटी के साथ मिल कर इसे विकसित किया था। इन्हें मूल रूप से चेंज द नेम ऑफ़ द डेज़ नाम की एक कला पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया था। हर एक पोस्टर देखने आने वालों को नई क़िस्म की कारवाइयों के बारे में सोचने और उन्हें अमल में लाने का एक मौक़ा देता है। यह उन्हें प्रेरित करता है कि वे काव्यात्मक उपकरणों और विचारों का अपना एक निजी संग्रह तैयार करें। “अपने आस-पास की आवाज़ों के ज़रिए बताएँ किसी को राह” से लेकर “एक जादुई बीज उगाएँ जो दैत्य को हरा दे” जैसे निर्देशों से, यह अनोखी कलात्मक कृति हमारे चारों तरफ़ की दुनिया की अभौतिकता पर विचार करने के लिए आमंत्रित करती है। यह हमें प्रेरित करती है कि हम जो कुछ भी जानते हैं, और जो कुछ भी हमें सिखाया गया है, उसको परे करके, उसकी जगह कुछ और, कुछ नया सीखें। आप अपना पोस्टर चुनें और उसके मुताबिक़ अमल करें।

प्रदर्शन, खेल, और लोगों के साथ संवाद होरविट्ज़ के काम में केंद्रीय भूमिका रखते हैं। शरीर और जुड़े हुए रिश्तों के संबंध में समय की अवधारणा उनके ज़्यादातर कामों में पाई जाती है, जिनमें कला पुस्तकें, फ़ोटोग्राफ़ी, परफ़ॉर्मेंस आर्ट, और डाक कला के साथ-साथ नए माध्यम (न्यू मीडिया) शामिल हैं। वे अपने कामों में अक्सर इंसानों द्वारा रची गई व्यवस्थाओं और प्राकृतिक परिघटनाओं के बीच के संबंधों की छानबीन करते हैं।

आदि दियानिता और आदित्य नोवाली

जन्म 1978, सुराकार्ता। सुराकार्ता में रहते और काम करते हैं।

सिग्निफिकेंट अदर, 2022-2023

कैनवस पर ड्रॉइंग, ओवरहेड प्रोजेक्टर, और पारदर्शी तस्वीरों के साथ एक इंटरेएक्टिव इंस्टॉलेशन

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति, रोह प्रोजेक्ट्स के सहयोग के साथ प्रस्तुत

आदि दियानिता और आदित्य नोवाली की सिग्निफिकेंट अदर ऐसे दो कलाकारों के बीच जारी एक परि-योजना की नई कृति है, जो आपस में बहन और भाई हैं और अपनी कलाओं के ज़रिए एक संवाद रचते हैं। आदि आदित्य की छोटी बहन हैं और उन्हें ऑटिज़्म डिसऑर्डर है। इसके साथ उनमें डाउन सिंड्रोम भी है, जो अपने परिवार और व्यापक समाज के साथ उनके संवाद को प्रभावित करता है। आदि एक पूरी तरह वयस्क महिला हैं, जिनकी मानसिक उम्र 5 साल की है। आदित्य ने देखा है कि आदि को घर पर रोज़ाना ड्रॉइंग बनाने की लगन है, जिससे वे सुकून हासिल करती हैं। इन ड्रॉइंगों की दृश्य भाषा और बनावट आदित्य की अपनी अमूर्त कृतियों से अनोखे तौर पर मेल खाती है, जिन्हें पूरी दुनिया में म्यूज़ियमों और गैलरियों में प्रदर्शित किया जा चुका है। यहाँ पेश की जा रही कलाकृति दोनों के बीच एक निश्चित संवाद और जुड़ाव को ज़ाहिर करती है, जो शब्दों और बौद्धिकता के पार जाकर इस भाई-बहन के बीच एक गहरे रिश्ते को दिखाती है।

एक निश्चित जगह के मुताबिक़ तैयार किए गए इस साइट-स्पेसिफिक इंस्टॉलेशन में भाई और बहन के कामों को एक साथ प्रदर्शित किया गया है, जिसमें आदि की ड्रॉइंगों को पारदर्शी तस्वीरों (ट्रांस्पेरेंसीज़) में बदल कर, उन्हें एक बड़े क्षेत्र में प्रोजेक्ट किया गया है, जहाँ आदित्य के एकसमान आकार के 365 कैनवस लगाए गए हैं। उनमें जटिल अमूर्त रेखांकन हैं, जो करीब-करीब उसी तरह से बनाए गए हैं, जैसे आदि और आदित्य को स्कूल में सिखाया गया था। उन्हें औपनिवे-शिक शैली से प्रेरित मूई इन्डी पेंटिंग की सबसे बुनियादी संरचनाओं की तर्ज़ पर बनाया गया है - सूरज, दो पहाड़, और धान के खेत। हरेक पैनल पर दिखाई गई तस्वीर आदित्य के बचपन के दौर की याद दिलाती है। यह आदि की मौजूदा मानसिक स्थिति का संकेत देती है, जो समाज की (ग़लत) अवधारणा के मुताबिक़, हमेशा एक बच्ची बनी रहेंगी। एक बंद जगह की दीवारों पर फैले हुए इन कैनवसों के ऊपर एक परत आदि के रेखांकनों की बनाई गयी है, जिन्हें कई प्रोजेक्टरों की मदद से इन कैनवसों पर प्रोजेक्ट किया जा रहा है। इस तरह ये आदि और आदित्य नोवाली दोनों के कामों के बीच के सन्दर्भ को क़ायम करती हैं।

नोवाली निर्माण (प्रोडक्शन) की जटिल पद्धतियों और व्यावसायिक सामग्री का उपयोग करते हुए मूर्ति-शिल्प और इंस्टॉलेशन तैयार करते हैं। वास्तुकला के प्रशिक्षण का उपयोग करते हुए, उनका काम संरचना, जगह और शहरी योजना जैसे विषयों को उठाता है। दर्शक की भागीदारी का उपयोग करते हुए नोवाली के काम जगह (स्पेस) से जुड़े सामाजिक मुद्दों की छानबीन करते हैं, जिसमें वे पद्धति संबंधी तकनीकी और व्यवस्थाओं की मदद लेते हैं।

अफ़्रा आइस्मा

जन्म 1993, हेग। हेग में रहती और काम करती हैं।

पोक प्रेस स्क्वीज़ क्लैस्प, 2021-23

कपास, सेरामिक, कपड़ा

मोन्द्रियान फंड्स और कुन्स्टइंस्टीटुट मेल्ली के सहयोग के साथ आयोजित, जिसमें सोफिया एर्नान्देस, चोंग कुई और रोज़ा दे ग्राफ़ का क्यूरेटोरियल सहयोग शामिल है

कलाकार और नो मैन्स आर्ट गैलरी के सौजन्य से

कई अलग-अलग संस्कृतियों से आने वाली प्रभावशाली महिला लेखकों जैसे बेगम रुकैया, ऑड्रे लॉर्ड और उर्सुला के। ले गुइन के लेखन के आधार पर आइस्मा ने अपनी कल्पना की मदद से चरित्र बुने हैं। उनको बनाने की प्रेरणा उन्हें उन रचनाओं से मिली है, जिन्हें वे पढ़ती हैं। आइस्मा ने एक ऐसा गर्माहट भरा और जीवंत स्पेस बनाया है, जहाँ जमा हुआ जा सकता है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ हम अपने शरीर को अनजाने जीवों के शरीर के साथ उलझा सकते हैं, जहाँ हम शारीरिक नज़दीकी, जुड़ावों और आलिंगन में ख़ुशी तलाश सकते हैं - जो हमारे इंसानी अनुभवों के बुनियादी तत्व हैं। फ़र्श पर बिछे हुए एक गलीचे के आसपास जमा हुई ये आकृतियाँ हमें अपने से आ मिलने के लिए बुलाती हैं, वे पुकारती हैं कि उनकी दुनिया और उन्हें देखने आने वालों की दुनिया के बीच में एक बातचीत शुरू हो, और मिल कर एक नई दुनिया की कल्पना की जाए।

अपने जाने-पहचाने हुए माहौल से बाहर लगने वाली किसी भी चीज को लेकर एक बढ़ती हुई बेचैनी, अलगाव, और अनिश्चितता के मुद्दे को उठाते हुए आइस्मा कला के ज़रिए आपसी समझदारी और साझे अनुभव की मदद से इन तकलीफों से राहत देने की कोशिश करती हैं। शिल्प तकनीकियों को नए तरीकों से इस्तेमाल करते हुए, आइस्मा निजी कहानियों की तलाश करती हैं और उन्हें सुनाती हैं, जिसके लिए वे कपड़े, मूर्ति शिल्प, और सेरेमिक से बने इमर्सिव और अंतरंग इंस्टॉलेशनों की मदद लेती हैं। उनके काम को प्रेरित करने वालों में जाने-पहचाने किरदार या काल्पनिक दोस्त हैं, जो ऐंद्रिकता और मौज-मस्ती को एक साथ ले आते हैं।

अफ़रा शफ़ीक़

जन्म 1989, बैंगलोर। गोवा में रहती और काम करती हैं।

नोबडी नोज़ फ़ॉर सर्टेन, 2021-2022

इंटरेक्टिव फ़िक्शन और आर्काइवल गेम

इस प्रोजेक्ट को गराज डिजिटल प्लेट-फ़ॉर्म के लिए 2020 में गराज म्यूज़ियम ऑफ़ कन्टेम्पररी आर्ट के गराज फ़ील्ड रिसर्च प्रोग्राम के सहयोग से तैयार किया गया था।

शोध, पटकथा, एनिमेशन और कला: अफ़रा शफीक

मुख्य प्रोग्रामर: कुशल नील

मुख्य ऐनिमेटर: पीयूष वर्मा

अतिरिक्त एनिमेशन: इशानी मित्रा

मौलिक संगीत और संगीत निर्माण: रुषद मिस्त्री और जोहरन मिरांडा

साउंड डिज़ाइन और गेम ऑडियो इम्प्लीमेंटेशन: होरासियो व्लादिवेसो

प्रोजेक्ट क्यूरेटर: यारोस्लाव वोलोवोद और वालेन्टीन दियाकोनोव

गराज फ़ील्ड रिसर्च टीम: ओक्साना पोल्याकोवा, दारिया बोबरेन्को और इवान यारिगिन

नोबडी नोज़ फ़ॉर सर्टेन एक ऑनलाइन कथात्मक वीडियो गेम है जो देखने वालों को कहानियों के समंदर में डुबकी लगाने के लिए आमंत्रित करता है। प्रोजेक्ट की शुरुआत होती है शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ और दक्षिण एशिया के बीच में सांस्कृतिक लेन-देन की एक कलात्मक तफ़तीश के साथ, जिसमें ख़ास तौर से बच्चों के लिए लिखी गई सोवियत किताबों का प्रमुख दक्षिण एशियाई भाषाओं में अनुवाद हुआ था। दूसरे विश्व युद्ध के बाद दक्षिण एशिया और सोवियत संघ के बीच दशकों तक चली गहन सोवियत कूटनीति के नतीजे में एक साझी जगह बनी थी जहाँ दक्षिण एशियाई और सोवियत अवाम के बीच एक मिली-जुली संस्कृति विकसित हुई थी - जहाँ अनुवाद किया हुआ साहित्य, द्विपक्षीय फिल्में, बैले कंपनियाँ और सर्कस दलों की यात्राएँ सामूहिक कल्पना को सराबोर करतीं और राहुल सांकृत्यायन की ऐतिहासिक कहानियों की किताब के शीर्षक की मदद से कहें तो 'वोल्गा से गंगा' के बीच फैले हुए इस व्यापक भौगोलिक विस्तार में रहने वाले लोगों को परस्पर समझदारियाँ मुहैया कराती।

ख़ास तौर से, स्लाव परीकथाएँ और सोवियत कहानियाँ भारतीय उपमहाद्वीप में 1960 से 1980 के मध्य के बीच बड़े होने वाले लोगों की बचपन की यादों में रच-बस गईं। आज अनेक दक्षिण एशियाई देशों में अब इन आउट-ऑफ-प्रिंट किताबों को जमा करने वालों का एक फलती-फूलती उप-संस्कृति है, जो बचपन की यादों और एक ऐसे राष्ट्र के लिए एक गहरे लगाव को गले से लगाए हुए हैं, जो कभी भी उनका राष्ट्र नहीं था और जो अब मौजूद भी नहीं है।

कम्युनिस्ट प्रचार के साथ जुड़ी हुई छवियों के परे जाते हुए, शफ़ीक़ विभिन्न क़िस्म के स्रोतों की मदद लेती हैं, जिनमें पूर्वी स्लाविक मिथक और लोक परंपराएँ, किताबों में छपे हुए चित्र, संपादकों के नाम बच्चों के ख़त, साउंड आर्काइव, लाख (लैकर) से बने मिनिएचर, कपड़े और सजावटी कलाएँ शामिल हैं। वे इन किरदारों, टुकड़ों, और अलग-अलग तत्वों को एक में मिला कर एक इंटरेक्टिव गेम तैयार करती हैं। इस अनोखी मिली-जुली कहानी को कलाकार द्वारा गढ़े गए मौलिक किरदारों की मौजूदगी समृद्ध बनाती है, जिनमें बिना पूँछ वाली एक बिल्ली और भीतर से खोखली एक मैत्र्योश्का गुड़िया शामिल हैं। एक आज़ाद किस्सागोई की मुक्तिकारी संभावनाओं का फ़ायदा उठाते हुए, शफ़ीक़ लोक कथा की बनावट पर एक आलोचनात्मक निगाह डालती हैं, और कहानी में बुनियादी दार्शनिक और राजनीतिक बिंदुओं को उठाती हैं, जिसमें देखने वाले को इससे सराबोर हो जाने, उसके साथ खेलने, अपनी पसंद चुनने और नई चीज़ों की खोज करने को प्रेरित किया जाता है।

शफ़ीक़ ने शोध की प्रक्रिया को एक कलात्मक खेल के मैदान के रूप में अपनाया है। उन्होंने आर्काइव में मिली चीज़ों , इतिहास, स्मृति, लोकगाथाओं, और फैंटेसी को आपस में मिला कर एक काल्पनिक दुनिया रची है, जिसमें संस्कृतियों का एक मिला-जुला रूप गुँथा हुआ है। उनका काम अनेक माध्यमों में आवाजाही करता है, जो परंपरागत लोक स्वरूपों की एक ख़ुद तैयार की गई ज़ुबान पर आधारित है और इंटरनेट और वीडियो गेम्स की डिजिटल भाषा के साथ उनका एक रिश्ता क़ायम करता है। जब वे अपने कंप्यूटर से नहीं चिपकी होती हैं, तब वे ग्लास मोज़ेक बना रही होती हैं।

अमिताभ घोष, सलमान तूर, और अली सेठी

अमिताभ घोष: जन्म 1956, कोलकाता। न्यूयॉर्क में रहते और काम करते हैं।

सलमान तूर: जन्म 1983, लाहौर। न्यूयॉर्क में रहते और काम करते हैं।

अली सेठी: जन्म 1984, लाहौर। न्यूयॉर्क में रहते और काम करते हैं।

जंगलनामा, 2021

इस कृति में गोलेम, 2023 की एक सीनोग्राफी के साथ एक किताब और ऑडियोबुक की कल्पना एक इंस्टॉलेशन के रूप में की गई है

कलाकार और हार्पर कॉलिंस इंडिया के सौजन्य से

गोलेम डिज़ाइन टीम: एरियल क्लोदे और सारा लायूँ

कहते हैं कि जब आप एक पुरानी दास्तान को सुनाते हैं या सुनते हैं, तब नई आवाज़ें इसमें शामिल हो जाती हैं और अफ़साने का पीछा करती हैं।

सुंदरबन एक ऐसी जगह है जहाँ अफ़साना, मिथक और हकीकत एक दूसरे में घुल-मिल जाते हैं। इसे अपना नाम मिला सुंदरी पेड़ों से जिनकी लकड़ी बहुत क़ीमती मानी जाती है। यह प्रजाति अब लुप्त होने की कगार पर है। सुंदरवन धरती का सबसे बड़ा डेल्टा और मैन्ग्रोव का जंगल है। यह बांग्लादेश के पश्चिमी तट और भारत में पश्चिम बंगाल के दक्षिणी किनारों के बीच फैला हुआ है। इस जंगल की रक्षक की दास्तान बन बीबी की दास्तान है। इस बंगाली गीत-कथा में वे दक्षिण राय से लड़ती हैं। राय एक प्रेत है जो स्थानीय निवासियों के सामने बाघ की शक्ल में आता है। सुंदरवन के गाँवों में यह एक लोकप्रिय कथा है जो अक्सर पाला या जात्रागान में पेश की जाती है। यह हिंदुओं और मुसलमानों के बीच धार्मिक सीमाओं को मिटा देती है, क्योंकि दोनों ही समुदाय जंगल और इसकी निगहबान का आदर करते हैं।

जंगलनामा लेखक अमिताभ घोष द्वारा इसी दास्तान की एक कड़ी का रूपांतरण है, जिसे कलाकार सलमान तूर के बनाए चित्रों के साथ किताब के रूप में प्रकाशित किया गया है। ऑडियोबुक के रूप में इसे संगीत कलाकार अली सेठी ने अपनी आवाज़ दी है। यह गीत-कथा इंसानी लालच, पारिस्थितिकी के साथ किए गए इंसानी कारनामों, और लोगों के अपने जंगलों और अपने आसपास के संसाधनों के साथ रिश्ते की एक छानबीन है। वह सारी परिस्थितियाँ जिनके कारण जलवायु परिवर्तन एक भीषण संकट के रूप में उभर कर आया है। घोष की अंग्रेज़ी भाषा में यह इस गीत-कथा को चौबीस वर्णों के पयार-नुमा छंदों में कहा गया है, जो मूल बांग्ला संस्करण के छंदों से मेल खाती है। कहानी के भीतर, बोले गए शब्दों की लय और मात्रा का प्रभाव देवी का आह्वान करते मंत्रों की तरह है। किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट आने वालों के लिए, आवाज़ों और तस्वीरों से मिल कर बने इस इंस्टॉलेशन में इस किताब की कल्पना एक इमर्सिव स्पेस के रूप में की गई है, ताकि वे मैन्ग्रोव, दलदली ज़मीन, मगरमच्छों, और दक्षिण राय के ताकतवर प्रेत, धनी व्यापारी ढोना , गरीब दुखी की दुनिया आदि से रूबरू हो सकें। सलमान तूर का ब्लैक एंड व्हाइट रेखांकन आपके साथ-साथ सफ़र करता है। आप इन रेखांकनों में जीव-जंतुओं की आँखों को भूल नहीं पाएँगे, जो मैन्ग्रोव के अंधेरे के उस पार से चमकती हुई आपको देख रही हैं।

अमिताभ घोष अपने ऐतिहासिक उपन्यासों, कहानियों और कथेतर लेखन के लिए जाने जाते हैं, जिन पर उन्हें पुरस्कार भी मिल चुके हैं। उनका लेखन उपनिवेशवाद और जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को उठाता है। वे ख़ास तौर से इस बात को देखते हैं कि ये दक्षिण एशिया के लोगों को किस तरह प्रभावित कर रहे हैं। सलमान तूर एक ऐसे कलाकार हैं जो अपनी रची नन्ही आकृतियों के लिए जाने जाते हैं, जिनमें वे अकादमिक तकनीक को अपने एक फ़ौरी स्केच शैली के साथ मिलाते हैं। बार-बार आने वाले रंग और कला इतिहास से लिए गए हवाले तूर की पेंटिंग के भावनात्मक प्रभावों को गहन बनाते हैं, और जीये गए अनुभवों से, और न्यूयॉर्क सिटी और दक्षिण एशिया के बीच रहने वाले नौजवान, क्वीयर भूरे आदमियों के कल्पित जीवन से लिए गए तत्व उनके अफ़सानों में फैंटसी के तत्व भरते हैं।

अली सेठी एक गायक, गीतकार, कंपोज़र और लेखक हैं जो क्लासिकल हिंदुस्तानी रागों को समकालीन पश्चिमी धुनों में पिरोने के लिए जाने जाते हैं। वे लाइव संगीत प्रस्तुतियों में ऐतिहासिक कहानियाँ, सांस्कृतिक संदर्भ और आलोचनात्मक कमेंट्री का एक मिला-जुला रूप पेश करते हैं। एक साथ मिल कर इन कलाकारों ने लफ़्ज़ों, आवाज़ों और तस्वीरों को मिला एक ऐसी कहानी रची है जिसे सबके लिए खुली एक जगह में अनुभव किया जाना है। इसकी सीनोग्राफी पेरिस स्थित एक अंतरराष्ट्रीय आर्किटेक्चर, आर्ट और डिज़ाइन स्टूडियो ने तैयार की है।

अंगा आर्ट कलेक्टिव

जन्म 1993, हेग। हेग में रहती और काम करती हैं।

खाल गाँव, 2022-2023

बाँस, चिकनी मिट्टी, मिट्टी, और जूट के साथ-साथ ऑडियो विज़ुअल इन्सटॉलेशन

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा मिल कर कमीशन की हुई कलाकृति। इसे इनलैक्स शिवदासानी फ़ाउंडेशन से अतिरिक्त सहयोग मिला है।

यह परियोजना दो असमिया शब्दों से निकली है: खाल, जिसका मतलब होता है निचली ज़मीन, या गाँव में या उसके आस-पास कोई पोखर। और दूसरा शब्द है: गाँव। 1970 के दशक से, ऊपरी असम के रहमारिया क्षेत्र में (जो अब भारत में स्थित है) लगातार आने वाली बाढ़ और नदी के कटाव के नतीजे में पोखर-तालाब, उपजाऊ खेत, दलदली ज़मीन, हरियाली और 35 गाँवों का एक समूह धीरे-धीरे मिट गया है, जिससे गाँववालों को विस्थापित होकर दूर-दराज के गाँवों में बसना पड़ा। ब्रह्मपुत्र नदी के अंतहीन प्रवाह में डूबे हुए खाल गाँव भौतिक भूगोल से मिट गए, वे अब सिर्फ़ उन गाँवों से लोगों और उनके वंशजों के ज़बानी इतिहास में ही बसते हैं। सामुदायिक भोजों में, जीवंतता और देहाती ऊर्जा से भरपूर मछली मारने के त्योहारों में, और साथ-साथ संगीत और प्रदर्शन की जगहों पर याद किए जाने वाले खाल गाँवों का वजूद अब सिर्फ़ पुरानी पीढ़ी की कहानियों में ही हैं, जो किशोर उम्र में उन जगहों पर कभी रह चुके थे। प्रदर्शनी में वे एक ऐसी जगह के रूप में उभरते हैं, जिन्हें उनके विस्थापित बाशिंदों की सामूहिक यादों से जीवंत बनाया गया हो।

अंगा आर्ट कलेक्टिव के सदस्यों ने इस अदृश्य गाँव और उनके बाशिंदों के बचपन की यादों को एक लेंस के रूप में लिया है, जिसके ज़रिए वे पारिस्थितिकी और राजनीतिक तौर पर उथल-पुथल भरे हालात में एक छीजती जा रही धरती पर इस बात पर फिर से सोचने की कोशिश कर रहे हैं कि ऐसे में एक बच्चे की छवि क्या मायने रखती है। इस अदृश्य गाँव की जगह के आसपास के अपने दौरों से और बुजुर्गों के साथ बातचीत के ज़रिए वे एक ऐसी जगह का खाका खींच पाए हैं, जो सराबोर कर देती है, जहाँ लेन-देन की प्रथा क़ायम है, चीज़ों, वास्तुशिल्प, और प्रदर्शनों के साथ एक शोख़ अंदाज जुड़ा हुआ है। बाढ़ से असुरक्षित इस इलाक़े में जलवायु के नतीजे में पलायन और मौसमी विस्थापन आम है, और इसने काम-धंधों, जगह, कहानियों, और समुदाय की यादों को बदल कर रख दिया है। यह इन्सटॉलेशन एक विस्थापित समुदाय की सामूहिक मानसिकता की पड़ताल करती है, और उम्र और पारिस्थितिकी, कलात्मक भाषा और स्मृति, शोख़ी और बुजुर्गियत के बीच रिश्तों की एक खोज करती है।

2010 में कुछ दोस्तों के एक समूह द्वारा शुरू किए गए अंगा आर्ट कलेक्टिव ने एक ऐसा नज़रिया विकसित किया है, ताकि कला के जरिए पूर्वोत्तर भारत में असम के समकालीन और जटिल इतिहास के साथ एक रिश्ता क़ायम किया जा सके। मौजूदा 13 सदस्यों के साथ, अंगा कला रचना के लिए एक रचनात्मक और सहकार पर आधारित जगह को प्रोत्साहित करता है, जिसका विकास दूसरे कलाकारों, गाँव के समुदायों, पारिस्थितिकी विशेषज्ञों, अकादमिकों, और एक्टिविस्टों के साथ ज्ञान को बाँटने के ज़रिए हुआ है। नो स्कूल और द ग्रेनरी ऐसी दो पहलकदमियाँ हैं जो साइट-स्पेसिफिक हैं और समुदाय के ज़रिए सीखने-सिखाने और नई समझ और नज़रिए को विकसित करने की कोशिश करती हैं। अंगा के लिए, एक कलेक्टिव एक बंद समूह नहीं बल्कि एक फलती-फूलती रहने वाली प्रक्रिया है।

अनपु वर्की

जन्म 1980, बैंगलोर। बैंगलोर में रहती और काम करती हैं।

समर्स चिल्ड्रेन, 2017-19

काग़ज़ पर फ़ेल्ट टिप वाले कलम, और ब्रश पेन

चुनिंदा चित्र ग्राफ़िक नावेल के लिए बनाये गए 92 कामों में से

किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के संग्रह से

केरल में एक रबड़ बाग़ान में स्थित समर्स चिल्ड्रेन एक खोई हुई जगह की याद में और एक ऐसे बचपन में बसती है, जिसे दो सहोदरों की आँखों से देखा गया है। इसमें हम देखते हैं कि वे अपना दिन कैसे गुज़ारते हैं। दोनों खेतों में दौड़ते हैं, चींटियों की क़तारों को देखते हुए, रबड़ के पेड़ों के बीच। वे नदी तक जाते हैं और बारिश में भीगते हैं, वे कौतूहल से भरे हुए और बारीक निगाहों वाले हैं, वे एक दूसरे की तरह दिखते हैं। वे पत्तियाँ चुनते हैं, झाड़ी-झुरमुटों में घूमते हैं, गाँव के तालाब में तैरते हैं और मछली पकड़ते हैं, सिर उठा कर आसमान को, पेड़ों को और उम्र में अपने से बड़े लोगों को ताकते हैं। एक-एक कर, अलग-अलग यादें, खेल, आवाज़ें, बचपन का मंज़र हमारे सामने आता है और छू जाता है। यहाँ बचपन चीज़ों को बारीकी से देखने और उनकी छानबीन करने का, अतीत की यादों का, गंधों और कहानियों को देखने और उनके बारे में पता लगाने की एक नई जगह है।
कलाकार द्वारा ख़ुद प्रकाशित की गई किताब के लिए बने इन एकरंगे रेखांकनों को पढ़ने का मतलब है ख़ुद को एक मद्धिम, मज़ेदार, ऐंद्रिक नज़रिए के लिए तैयार करना और दिन को ऐसे गुज़ारने के लिए ख़ुद को तैयार करना जहाँ अनेक नाज़ुक, नन्ही-नन्ही घटनाएँ हमारे आसपास घटती रहती हैं। किसी पेड़ के ऊपर एक जायफल खिल उठता है। कहीं एक कटहल धरती पर गिर पड़ता है। अमरूद के पेड़ों पर अग्नि चींटियां पत्तियों का घर बनाती हैं। वर्की ने इस ख़ामोश ग्राफ़िक उपन्यास को पूरा करने में दो साल का समय लगाया, जो कुछ हद तक उनके अपने जीवन की कहानी भी है, जब उन्होंने ग्रामीण केरल में अपनी नानी के पुश्तैनी गाँव में अपना समय बिताया था। हर रेखांकन के साथ वे एक ऐसी जगह रचती हैं जिसके बारे में वे नहीं जानती थीं कि वह उनके भीतर था या अभी भी उनके भीतर है।

भारत के विभिन्न शहरों में अपनी अनोखी ग्राफ़िटी और पब्लिक म्यूरलों के लिए मशहूर अनपु वर्की की शैली में एक निराला अंदाज अपने जीवंत रूप में दिखता है: यह बेबाक़ है, प्रयोगों से नहीं हिचकता, और उसमें वे अपनी कमज़ोरियों को ज़ाहिर करने से भी नहीं डरतीं। बरसों से भारत में फलते-फूलते स्ट्रीट आर्ट में उनका भारी योगदान रहा है। ग्राफ़िक उपन्यास और किताबें तैयार करना उनके काम का एक और पहलू है।

ब्लेज़ जोसेफ, अत्रेयी डे, और न्यू एजुकेशन ग्रुप - फ़ाउंडेशन फ़ॉर इनोवेटिव रिसर्च इन एजुकेशन (एनईजी-एफ़आईआरई)

मल्टीलिंग्वल एजुकेशन मटेरियल - आदिवासी भाषाओं में किताबें और चार्ट, 2014-2015

कोंडा ढोरस, कुई और आदिवासी उड़िया, बैगानी, परजा और गडबा की आदिवासी भाषाओं में किताबें

बेली ऑफ़ द स्ट्रेंज के भीतर वाचिक परंपराएँ खेल-खेल में शिक्षाशास्त्र से मिलती हैं। उनकी यह भेंट किताबों और बड़े-बड़े शब्दहीन चार्टों के ज़रिए होती है जो मौसमों, ग्रामीण पारिस्थितिकी, और रस्मों के बारे में हैं। कला के ज़रिए शिक्षा देने वाले कलाकारों, और एनईजी-एफ़आईआरई जैसे ज़मीनी संगठनों का एक समूह मिल कर बच्चों के लिए उनकी अपनी मातृ भाषा में कहानियाँ और कविताएँ लिख और प्रकाशित कर रहा है। ऐसा करते हुए इसका मक़सद शिक्षा में "संसाधन" के मायनों पर दोबारा विचार करना है, ख़ास कर आदिवासी समुदायों से जुड़े उन बच्चों के लिए जिनकी किताबें हमेशा उनकी अपनी बोली जाने वाली ज़बान में नहीं होती हैं। कलाकारों और संगठनों का यह समूह बुज़ुर्ग आदिवासियों, सरकारी स्कूलों, प्राथमिक शिक्षकों, बीच में स्कूल छोड़ देने वाले किशोरों, और साथ ही साथ छात्रों और प्रोग्राम एनिमेटरों से मिला, ताकि ऐसी किताबें बनाई जा सकें जो हरेक बोली के बारीक़ फ़र्क़ों का सम्मान करने की कोशिश करती हों, और उन भाषाओं के रोज़मर्रा के उपयोग के ज़मीनी ख़ासियतों को भी बनाए रखें, वे व्याकरणों में बंधी हुई और नियमों में कसी हुई कोई बेजान और एकरस भाषा न बन जाएँ। यहाँ ब्लेज़ जोसेफ और अत्रेयी डे ने उन्नीस किताबों और सात चार्टों के एक सेट में से एक चुनिंदा संकलन पेश किया है जिसे उन्होंने अरकु (आंध्र प्रदेश) और कोरापुट (ओड़िशा) के समुदायों के साथ मिल कर विकसित किया है। इस सामग्री में रोज़मर्रा के नए-नए अनुभव भी हैं और सदियों पुरानी कहानियाँ भी। साथ ही साथ उस ज़बान को बोलने वाले बाशिंदों के मौजूदा हालात की निशानियाँ भी उनमें मिलती हैं - इसमें एक सफल शिकार की कहानी से लेकर, बदलते हुए मौसमों की ख़ूबसूरती का बयान, गाँव के त्योहार, और समुदाय के जश्न, घर/स्कूल/खेत/जंगल में रोज़मर्रा के काम-काज से लेकर बच्चों की निजी ख़ुशियों और दुख के पल, और जानवरों और इंसानों के बीच के रिश्ते तक सब मिलते हैं।

वेरी स्मॉल फीलिंग्स प्रदर्शनी और इसके विस्तृत मंच ट्रांस्नेशनल फोकलोर रिसर्च फ़ोरम की मंशा है कि आपस में मिल कर काम करने की भावना को और बहुभाषी पुस्तक परियोजना के इस सफ़र को सधे हुए तरीक़े से पेश किया जाए। लिखने और चित्र बनाने की एक ऐसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जो वाचिक की ताक़त के ख़िलाफ़ नहीं जाती, बल्कि बदलते रहने के काबिल एक ऐसा औज़ार है जो आपस में जुड़ने और संवाद क़ायम करने में मदद करता है।

प्रक्रिया:

2014 में ब्लेज़ जोसेफ और अत्रेयी डे एनईजी-एफ़आईआरआई के भोपाल चैप्टर में कला फैसिलिटेटर और सलाहकार के रूप में आमंत्रित किए गए थे, जिसके साथ मिल कर उन्होंने 2009 से मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के भील, गोंड और बैगा आदिवासियों के साथ कला और शिक्षा पर सामुदायिक कार्यशालाओं का नेतृत्व किया है। अत्रेयी और ब्लेज़ ने कार्यशाला मॉडल के ज़रिए आदिवासी समुदायों के साथ संबंध कायम किया, जिनमें अराकु और कोरापुट इलाके से छह आदिवासी समूहों से आए एक सौ से अधिक भागीदार शामिल थे। पहला क़दम कहानियों और गीतों, स्थानीय लोकगाथा को सुनना और जमा करना था, जिनमें हरेक समुदाय के अपने अपने संस्करण भी शामिल हैं। अगला कदम संपादन और दृश्य रचने का, कथा के प्रवाह को तय करने का, उन्हें लिखने और ज़रूरत पड़ने पर अनुवाद करने का था। इसके बाद शुरुआती मसौदा तैयार किया गया, कट आउट बनाए गए और फिर कोलाज रचा गया। इस बार फिर से बच्चों और समुदाय के सदस्यों को इसमें शामिल किया गया। ये कलाकृतियाँ तेलुगु, ओडिया, गडबा, परजा, आदिबासी/देसिया ओड़िया, कोंडादोरा, और कुई भाषाओं में रची गईं। इस प्रक्रिया ने इस प्रयोग के भागीदार लोगों को इसमें अपनी निजी आवाज़ों पर फिर से दावा करने और अपनी संक्षिप्त मानवीय कहानियों को हास्य भरे और शोख़ तरीक़ों से सुनाने में मदद की। अपनी उत्पीड़ित स्थिति या जीवन के हालात से पार पाते हुए कह पाने की आज़ादी मुख्य प्रेरणा थी।

ब्लेज़ जोसेफ एक कलाकार, कला शिक्षक, और एक किसान हैं। वे पिछले 12 वर्षों से कला कार्यशालाओं, समुदाय आधारित परियोजनाओं, और शिक्षण संस्थानों के लिए और विभिन्न सामाजिक संगठनों के लिए कला आधारित पाठ्यचर्या तैयार करते रहे हैं। वे 2018 से कोच्चि बियनाले फ़ाउंडेशन के आर्ट बाई चिल्ड्रेन प्रोग्राम का नेतृत्व कर रहे हैं। अत्रेयी डे एक कला शिक्षक और इलस्ट्रेटर हैं, जिनका काम स्वतंत्र वैकल्पिक प्रकाशकों के यहाँ से प्रकाशित होता है। वे एक छोटे-से स्कूल का हिस्सा थीं, जहाँ कला शिक्षा देने का मुख्य माध्यम था और उन्होंने हिमालय की पहाड़ियों में अर्ध-ग्रामीण क़स्बों में पढ़ाया है। उन्होंने ब्लेज़ के साथ मिल कर 2012 से 2018 के बीच कला शिक्षाशास्त्र पर सहभागिता आधारित कार्यशालाओं का नेतृत्व किया है।

बिनोदबिहारी मुखर्जी

जन्म 1904, बेहाला। निधन 1980, नई दिल्ली।

समर्स चिल्ड्रेन, 2017-19

कोलाज, 1957 - 1960 के दशक का आख़िरी दौर

ग्रेफाइट, रंगीन काग़ज़, अख़बार, जूट के धागे, काग़ज़ पर चिपकाए हुए

किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के संग्रह से

“जिस आदमी के पास निगाह की ताक़त हो, उसे यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि रोशनी क्या है। और जहाँ रोशनी है वहाँ रंग है।”-

बिनोदबिहारी मुखर्जी

इन रंगीन कोलाजों की संवेदनशील नाज़ुकी देखने वालों को बिनोदबिहारी मुखर्जी के दृश्यों की दुनिया में ले जाती है। 53 साल की उम्र में दृष्टि खो देने के बाद बनाए गए इस काम का हर कोलाज अपनी यादों में बसी दुनिया को फिर से रचने की उनकी एक कोशिश है। एक मुकम्मल अंधेरे से घिर जाने के बाद इनमें उन्होंने एक ऐसी दृश्य भाषा की फिर से रचना करने की कोशिश की है, जिसे वे एक “नया अहसास, नया अनुभव, और एक नया वजूद” कहते हैं। अपनी यादों की मदद से, रंगों और टेक्स्चर को महसूस करते हुए, उन्होंने शांतिनिकेतन के देहाती भूगोल के मंज़र को टुकड़े-टुकड़े जोड़ा है। इनमें आपको बंगाल की लोककला जात्रा के अनुभव तो मिलेंगे ही। साथ ही अपने माहौल और रोज़मर्रा की प्रेरणाओं से संवाद क़ायम करते हुए, उन्होंने जूट के धागे, अख़बार और चिकने रंगीन काग़ज़ जैसी चीज़ों से ऐसी सतहें रची हैं जिन्हें आप छू कर महसूस कर सकते हैं। बच्चों जैसे कौतूहल और शोख़ी के साथ, दृश्यों को रचने और दृश्यों में सोचने की उनकी रोज़मर्रा की प्रेरणादायक आदत आकृति और उसके परिवेश को एक विशेष संदर्भ देती है, और उसमें नए मायने भरती है। जैसे कि द ब्वॉय एंड शेल नोज़ की गतिशील आकृति में हम कलाकार को मुकम्मल होते हुए देखते हैं, यह देखते हैं कि वे क्या छू रहे थे, क्या महसूस कर रहे थे और क्या कल्पना कर रहे थे। इसमें हम कलाकार के साथ-साथ अपनी ख़ुद की दुनिया को महसूस करने की कार्रवाई में शामिल होने का एक बुलावा पाते हैं।

आज़ादी के पहले के भारत में एक अहम आधुनिकतावादी कलाकार रहे मुखर्जी आधुनिक भारत के सबसे शुरुआती कलाकारों में से थे जिन्होंने म्यूरलों का उपयोग कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए किया। उन्होंने 1919 में कला भवन, शांतिनिकेतन में अध्ययन किया, जहाँ नंदलाल बोस और रवींद्रनाथ टैगोर उनके शिक्षक थे। आगे चल कर वे 1925 में ख़ुद वहाँ कला शिक्षक बने और 1949 तक उन्होंने अपना सबसे रचनात्मक दौर वहीं बिताया। अपने समय के अनेक कलाकारों की तरह, वे पूर्वी एशिया की कला से प्रेरित थे, और उन्होंने 1936-37 में चीन और जापान का सफ़र किया ताकि अलग-अलग क़िस्म के ब्रश और इंक की तकनीकें सीख सकें। 1948 में उन्होंने नेपाल गवर्नमेंट म्यूज़ियम, काठमांडू के क्यूरेटर के रूप में नेपाल की यात्रा की। उन्होंने कलाकारों-शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए मसूरी और देहरादून में भी कई वर्ष बिताए। एक शिक्षाविद के रूप में, उन्होंने शांतिनिकेतन में छात्रों की पीढ़ियों को प्रभावित किया और शिक्षाविज्ञान और कला शिक्षा पर आलोचनात्मक और अहम चिंतन करते हुए लेख लिखे।

चित्तप्रसाद

जन्म 1980, बैंगलोर। बैंगलोर में रहती और काम करती हैं।

एंजेल्स विदाउट फेयरी टेल्स, 1952

लिनोकट ऑन पेपर

दिल्ली आर्ट गैलरी मॉडर्न के संग्रह से

चित्तप्रसाद का मानववाद हमें उस चुनौती का हिस्सेदार और गवाह बनाता है, जो उन्होंने आज़ादी के बाद के भारत में गैरबराबरी से भरे सामाजिक रिश्तों और प्रगति की अवधारणा के सामने खड़ी की थी। बचपन की मासूमियत की जिस छवि का इतना गुणगान किया जाता है, बाल मजदूर की उनकी छवि उस पर सवाल करती है। एंजेल्स विदाउट फेयरी टेल्स 1952 में बनाई गई एक अहम लिनोकट सीरीज़ है, जिसे आगे चल कर डेनमार्क की यूनिसेफ़ कमिटी ने प्रकाशित किया और इसे इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस इन डिफ़ेन्स ऑफ़ चिल्ड्रेन को समर्पित किया गया। खोए हुए बचपन की ये कहानियाँ गरीब परिवारों के बच्चों, या उन यतीम बच्चों की रोज़मर्रा की मेहनत जैसे अत्याचारों को रेखांकित करती हैं, जिन्हें अपने उम्र के हिसाब से गैरमुनासिब ज़िम्मेदारियाँ उठानी पड़ती हैं, जो बड़ों के लिए बनी हैं। ये रचनाएँ किसी तरह ज़िंदा रह पाने, बदहालियों, बच्चों के साथ बदसलूकी और समय से पहले बड़े हो जाने की आपबीती सुनाती हैं: एक बंदर के साथ सड़क पर करतब दिखाता एक बच्चा, पटरी पर जूता पालिश करने वाले बक्से का साथ सोता हुआ एक बच्चा, गुज़ारे के लिए नाव चलाता एक बच्चा, एक दूसरा बच्चा जो बड़ों की तरह कठोर घरेलू कामों में लगा हुआ है।

चित्तप्रसाद पूरे जीवन बच्चों के अधिकारों के हिमायती बने रहे। 1943 के बंगाल के अकाल पर अपनी ऐतिहासिक रिपोर्टिंग के दौरान उन्होंने भारी भुखमरी, लावारिस हो जाने, बदसलूकी और परिवार के सदस्यों से बिछड़ कर जान बचाने के लिए भीख माँगने वाले बच्चों की तकलीफ़ों को दर्ज किया था। उन्होंने अकाल के दौरान खुले यतीमखानों का दौरा किया और बच्चों के हालात की रिपोर्टिंग की। उन्होंने बताया कि उनके लिए मेडिकल आपूर्ति और राहत की कितनी कमी है। अपने ब्रश और इंक से बनाए रेखांकनों में वे अकाल के मारे, फूले पेट, थके चेहरों, ज़ख़्मों और बीमारियों से भरे कुपोषण के शिकार शरीरों वाले बच्चों की निगाहों का उपयोग दर्शकों को इस तरह उकसाने के लिए करते हैं कि वे संवेदना से भर जाएँ और उनकी सोच हालात को बदलने की कार्रवाई की तरफ़ मुड़ जाए।

टेल मी अ स्टोरी प्लीज़!
1960 का दशक

बच्चों की किताबों के लिए बनाए गए रेखांकन,
1960 का दशक

किंगडम ऑफ़ रसगोल्ला, बेंगाली फोकटेल्स रीटोल्ड एंड इलस्ट्रेटेड बाई चित्तप्रसाद

द लिटिल मरमेड,
नवंबर 27, 1968

द एंजेल, नवंबर 28, 1968

होल्गर एंड डेन, 1960 का दशक

पेपर पर लिनोकट

दिल्ली आर्ट गैलरी मॉडर्न और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के संग्रह से

किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट चित्तप्रसाद के आह्वान “टेल अ स्टोरी” (एक कहानी सुनाओ) पर चलने की कोशिश करता है। इन शब्दों और इस अवधारणा को अपनाते हुए यह अपने कलाकारों और दर्शकों को ऐसी जगहें खोजने का बुलावा देता है, जहाँ ऐसी कहानियाँ कही, दोहराई और सुनी जा सकें जो उनके लिए अहमियत रखती हैं। चित्तप्रसाद ने बच्चों की किताबों के लिए ख़ुशमिज़ाज और हंसी-खेल से भरपूर रेखांकन और प्रिंट तैयार किए थे जिनमें चिड़ियों और जानवरों की एक काल्पनिक और जीवंत दुनिया दिखाई देती है। ये रचनाएँ चित्तप्रसाद की “वास्तविक दुनिया” की उदास छवियों के एकदम उलट हैं, जिनमें से कुछ रचनाएँ इस प्रदर्शनी में भी शामिल हैं जो बाल श्रम को दिखाती हैं। अपनी समाजवादी प्रतिबद्धता, राजनीतिक उत्साह, और आंदोलनों के लिए जाने जाने वाले चित्तप्रसाद ने 1949 में कम्युनिस्ट पार्टी के साथ अलग हो जाने के बाद अपना ज़्यादातर वक़्त बंबई में बिताया जहाँ उन्होंने कठपुतलियाँ बनाईं और कठपुतली रंगमंच के साथ प्रयोग किए। खेलाघर में उन्होंने बच्चों के लिए नाटक और हास्य प्रस्तुतियाँ लिखीं, निर्देशित कीं और किरदारों के लिए पोशाकें बनाईं। ये बच्चे अंधेरी इलाक़े में उनके मुहल्ले के आसपास की अस्थायी बस्तियों के थे। इन प्रस्तुतियों को देखने वाले बताते हैं कि वे उम्मीद और ठहाकों से भरपूर हुआ करती थीं। बंगाली लोककथाओं का या हांस क्रिश्चियन एंडरसन जैसे मशहूर पश्चिमी लेखकों की कहानियों का उपयोग करते हुए चित्तप्रसाद के रेखांकनों में लोक रचनाओं जैसी सादगी थी, वे बच्चों के गीतों जैसी लय से भरे हुए होते, उनमें ग्रामीण जीवन के पहलू रचे-बसे होते, ताकि फ़ौरन एक रिश्ता और अपनापन क़ायम हो सके।

चित्तप्रसाद बंगाल के बँटवारे के पहले के एक रेडिकल कलाकार थे, जिन्होंने अपने शुरुआती साल चट्टग्राम में बिताए जो अब बांग्लादेश में पड़ता है और पहले चटगाँव के नाम से जाना जाता था। उन्हें 1930 के दशक के चटगाँव विद्रोह से बहुत प्रेरित थे। आज़ादी से पहले के भारत में मौत, बीमारी, ग़रीबी और टकरावों को बयान करती उनकी तस्वीरें आज भी प्रासंगिक बनी हुई हैं। बेंगाल फेमिन (बंगाल अकाल) सीरीज़ (1944-45) के तहत अकाल के मारे बच्चों, परिवारों और दवाखानों के उनके मशहूर स्केच अकाल की बदहाली का आँखोंदेखा बयान बन गए और कम्युनिस्ट अख़बारों के ज़रिए लोगों तक पहुँचे। 1949 तक वे अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया के सदस्य थे, और उन्होंने इसके सांस्कृतिक मंच में भारी योगदान दिया, जिसमें कई मशहूर लेखक, कवि और कलाकार शामिल थे।

ड्रियाँ जेनेली

जन्म 1983, श्कोदर। तुरीन में रहते और काम करते हैं।

समर्स चिल्ड्रेन, 2017–19

नो वाइज़ फ़िश वुड एस्केप विदाउट फ्लाइंग

2019, एचडी वीडियो, रंगीन, साउंड, 07 मिनट 10 सेकेंड

हाउ डीप कैन अ ड्रैगनफ्लाई स्विम अंडर द ओशन?

2021, 4k फ़िल्म, रंगीन, साउंड, 12 मिनट 23 सेकेंड

द फ़ायरफ्लाई कीप्स फ़ॉलिंग एंड द स्नेक कीप्स ग्रोइंग

2022, रंगीन, साउंड, 11 मिनट 46 सेकेंड

कलाकार और जॉर्जो पेर्सानो गैलरी के सौजन्य से, जिनका इस प्रस्तुति में सहयोग भी शामिल है

तीन फ़िल्मों की इस त्रयी में जेनेली समकालीन परीकथा के मॉडल को अपनाते हुए कहानी के ढाँचे का उपयोग इस तरह करते हैं कि डर, नाकामी, अलगाव और जलन की इंसानी भावनाओं को पेश किया जा सके। ये अंदरूनी अहसास इस बात पर असर डालते हैं कि कैसे इंसान सियासत और वास्तुकला के ज़रिए बाहरी दुनिया की रचना करते हैं। इन अध्यायों को बाल्कन पेनिन्सुला की तीन राजधानियों में ब्रुटलिस्ट मूल की मशहूर जगहों पर विकसित और फ़िल्माया गया है। वे जगहें हैं: नेशनल लाइब्रेरी, प्रिस्टिना, कोसोवो गणतंत्र; पिरामिड, टिराना, अल्बानिया; और पोस्ट ऑफिस, स्कोपये, उत्तरी मकदूनिया।

पहली फ़िल्म में एक मछली एक शार्क से बचने की कोशिश में एक जाल में फँस गई है, जो कोसोवो की नेशनल लाइब्रेरी की बाहरी दीवारों पर बना हुआ है। बोनेवेट नाम की एक नॉन-प्रॉफ़िट संस्था के साथ काम करते हुए बच्चों के एक समूह ने जेनेली के साथ एक खेल खेला, जिसमें मछली को शार्क से बच कर जाल से छुड़ा लेने के उपायों की कल्पना की गई। बोनेवेट मानती है कि तकनीक विज्ञान को सीखने, जीवन को समझने और कल्पना को विकसित की एक पद्धति है। साथ मिल कर उन्होंने एक कहानी तैयार की, जिसमें नेशनल लाइब्रेरी का ब्रूटलिस्ट वास्तुशिल्प एक लचीले पदार्थ में तब्दील हो गया, और मछली एक चिड़िया की शक्ल में बदल गई जो आसमान मैं तैर सकती है। यह फ़िल्म हमें एक कहानी पेश करती है जहाँ बच्चों को समझदारी की कला में माहिर दिखाया गया है, और जिसमें कोसोवो में नेशनल लाइब्रेरी का वास्तुशिल्प संभावनाओं के एक जाल में बदल जाता है, ऐसी संभावनाएँ जिनकी कल्पना करने की ज़िम्मेदारी हमारी है।

दूसरी फ़िल्म एक ड्रैगनफ़्लाई की कहानी सुनाती है, जो अपने पंखों को हिलाते रहने के बावजूद, इस बात के लिए अभिशप्त है कि वह कभी उड़ नहीं सकती है। इस तरह वो समंदर से दूर जा पाने में नाकाम है। अध्यात्मिक गहराई, शक्ति, नज़रिए में बदलाव के एक प्रतीक के रूप में ड्रैगनफ़्लाई, और इसका रूपांतरण रिलों रिस्टो के सचमुच के अनुभव की याद दिलाती है, जिन्होंने अल्बानियाई जेलों में 21 साल एकांत क़ैद में बिताए, और अपनी क़ैद के आख़िरी दौर में उन्होंने अपने आस-पास मौजूद चीज़ों से ऐसे मशीनी कीड़े तैयार किए जो उड़ने के काबिल थे। ड्रैगनफ़्लाई टिराना के पिरामिड के भीतर उड़ती है, जो 1980 के दशक में अल्बानियाई तानाशाह एनवेर होजा की याद में बना एक स्मारक है। ड्रैगनफ़्लाई इस ढाँचे के भीतर बंद है, जहाँ से उड़ पाने और इस पिरामिड से निकल पाने की कोई संभावना नहीं है। यह बाहर से थोपे गए नियमों के बंद दायरों से बच कर निकल पाने के लिए, वजूद के संघर्ष का एक रूपक है।

गणेश पाइन

जन्म 1937, कलकत्ता। निधन 2013, कोलकाता।

शतबोर्षेर रूपकथा/हंड्रेड ईयर्स ऑफ़ फेयरीटेल्स, 1983

सात भाई चंपा

राजकुमारी पोंचो पुष्पा

मोने मोने

मनिराज

रामधनुर गोल्पो

चंद्रचूड़ राजपूत

पोरी-र-गोल्पो

बुरो आंगुल

खीड़ि

अनटाइटल्ड

काग़ज़ पर कलम और स्याही

किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के संग्रह से

टेंपेरा तकनीक के उस्ताद के रूप में मशहूर गणेश पाइन के चित्रों की दुनिया सपनीले दृश्यों, रहस्यमय आकृतियों, और ठाकुरमार झुलि जैसे स्रोतों की परीकथाओं से निकली निशानियों से भरी हुई है।* पाइन का बचपन कलकत्ता (अब कोलकाता) की एक ढहती हुई हवेली में गुज़रा, जहाँ वे अपनी दादी की परीकथाओं, लोकगाथाओं की जादुई दुनिया, और महाकाव्यों की मिथकीय कहानियों को सुनते हुए, और जात्रा कलाकारों को देखते हुए बड़े हुए। इन सभी ने उनकी कल्पनाओं को आँच दी। उन्होंने बड़ी लगन के साथ बच्चों के लिए एनिमेटेड रेखांकन और चित्र पुस्तिकाएँ बनाईं, जो उनके काम का एक बहुत मज़बूत पहलू हैं और जिनपर अब जाकर कला-इतिहास की नज़र पड़ी है। क़रीब दो दशकों तक उन्होंने एक एनिमेशन स्टूडियो में इलस्ट्रेटर के रूप में काम किया। हमें इलस्ट्रेशनों के इस अनोखे चयन में वे लोकप्रिय कहानियों और मिथकों से ली गई आकृतियों को रचते या उन्हें नए रूप देते हुए दिखते हैं, उन्हें इस तरह बनाते हैं कि वे दार्शनिक और असुरक्षित चेतावनियाँ बन जाती हैं। ये रेखांकन मशहूर बंगाली लेखकों सुकुमार रॉय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और दूसरों द्वारा लिखी गई परीकथाओं के एक संकलन के लिए बनाए गए थे। इनमें से हरेक इलस्ट्रेशन कहानियों के एक काव्यात्मक पल को पेश करता है: खीड़ि में खिड़की पर मौजूद अकेली औरत, राजकुमारी पोंचो पुष्पा में बीमार की देखभाल करती रानी, मोने मोने में फूलों को सूंघता राजकुमार, या सात भाई चंपा में चंपा के फूलों में बदल गए अपने सात बच्चों से मिलता राजा।

दृश्यों में ये कहानियाँ रचते हुए, पाइन ने पाठक के लिए ऐसी जगहें तैयार की हैं, जिनसे होकर वे कहानियों के भीतर दाख़िल हो सकते हैं और इन कालजयी कहानियों के साथ अपनी ख़ुशी, अपने दुख, और अपनी अंतरंगता को जोड़ सकते हैं। पाइन का विशाल काम जादुई, रहस्यमय दुनिया पर एक चिंतन है, जो जितना काव्यात्मक है उतना ही डर, मौत, अंधेरेपन, और अज्ञात से भी भरा हुआ है। जैसा कि उनके साथी कलाकार परितोष सेन ने बड़ी ख़ूबसूरती के साथ कहा था, पाइन की दुनिया ऐसी है “जहाँ महसूस करना देखने से ज़्यादा अहम हो जाता है।”

*ठाकुरमार झुलि (1907) स्थानीय बंगाली लोक और परीकथाओं के पहले प्रकाशित संकलनों में से एक थी, जिसका संपादन और संकलन दखिनारंजन मित्र मजुमदार ने किया था। यह बंगाल की स्थानीय लोकगाथाओं को दर्ज करके प्रकाशित करने की शुरुआती कोशिशों में से एक थी, ताकि बढ़ती हुई लोकप्रिय अंग्रेज़ी परीकथा किताबों द्वारा कब्ज़ा की जा रही जगह पर अपना अधिकार किया जा सके। दखिनारंजन ने अनेक गाँवों की यात्रा करके अपने फ़ोनोग्राफ़ पर लोकगाथाओं को रेकॉर्ड किया, और बाद में अनेक किताबों में उन्हें संपादित करके प्रकाशित कराया।

गिदरी बावली फ़ाउंडेशन ऑफ़ आर्ट्स

जन्म 1904, बेहाला। निधन 1980, नई दिल्ली।

बोन्ना, 2022

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन , किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट और वर्ल्ड वेदर नेटवर्क द्वारा कमीशन की गई कृति

बांग्लादेश एक ऐसी जगह है जहाँ बोन्ना नाम की लड़कियाँ रहती हैं, खेलती हैं, और हर जेंडर के सजीवों और निर्जीवों के साथ बड़ी होती हैं। बोन्ना का मतलब है बाढ़, लेकिन हर बाढ़ बुरी नहीं होती है। कई सारी आँधियों को लोगों का नाम दिया जाता है, लेकिन यहाँ एक इंसान का नाम मौसम के एक पैटर्न के आधार पर रखा गया है। बोन्ना एक आज़ाद ख़्याल लड़की है, और वह दुनिया में अफ़रा-तफ़री ले आती है। कभी-कभी अफ़रा-तफ़री नई संभावनाओं को मुमकिन बनाती है, क्योंकि यह जमे-जमाए ढाँचों को तोड़ डालती है। बांग्लादेश और दक्षिण एशिया के दूसरे देशों में जलवायु परिवर्तन और मानव-निर्मित ढाँचों की वजह से हिंसक तबाही लाने वाली बाढ़ एक गंभीर ख़तरा है, और हम उन कहानियों से सीख सकते हैं जो नदियों के इस मुल्क में हज़ारों वर्षों से बहती आ रही हैं।

इस वीडियो में दिखने वाले बोन्ना के किरदार की कल्पना बांग्लादेश में बच्चों के एक समूह ने की थी, जिनके समुदायों के बड़े-बुज़ुर्ग जलवायु परिवर्तन के नतीजे में विस्थापित होने वाले लोगों में से हैं। इनमें से कई कभी बांग्लादेश से बाहर नहीं गए हैं, लेकिन वे असल में दुनिया के कार्बन उत्सर्जन के प्रभावों को गहराई से महसूस कर सकते हैं, जबकि उन्होंने ख़ुद इस उत्सर्जन में ख़ास भागीदारी नहीं की है। बच्चों का जीवन समुदाय के बड़े-बुज़ुर्गों, और पर्यावरण के नतीजे में होने वाले उनके विस्थापन के साथ जुड़ा हुआ है, जिसके नतीजे में वे बांग्लादेश के ठाकुरगाँव चले आए। उन्होंने 2023 ढाका आर्ट समिट के विषय की व्याख्या करने वाले एक वीडियो के लिए पटकथा लिखी, जिसमें उन्होंने इस बात को फिर से समझने की कोशिश की है कि मौसमों की उग्र स्थितियों में जीने का क्या मतलब होता है। ढाका आर्ट समिट 2023 से आकर बोन्ना कई और किरदारों के साथ जुड़कर वैरी स्माल फीलिंग्स एक्सिबिशन को एक्टिवेट करेंगे।

कलाकार, किस्सागो और कठपुतली कलाकार:

शुमि रानी, तिथि रानी, चंपा रानी, आशा रानी, रूपोशी रानी, शांतोना रानी, तिथि रानी, शहनाज परवीन, शुनील बर्मन, नोयोन बर्मन, अपोन बर्मन, ओमोल बर्मन, पूजा रानी, स्त्राबंती रानी, स्तुति रानी, शुभो बर्मन, ओभि बर्मन, अपूर्बा बर्मन, अकलु बर्मन, राजकुमार बर्मन, अमल टुडु, शुधीर दास, कृष्णो दास, नोयोन किशोर राय

इस टीम के अधिकतर सदस्य 10 से 15 साल की उम्र के हैं और ठाकुरगाँव, बांग्लादेश में रहते हैं।

ग़ज़ल अवरज़मानी

जन्म 1980, तेहरान। टोरंटो और मार्गेट में रहती और काम करती हैं।

स्टक इन टाइम वॉल, 2022-2023

साबुन से बने इन्सटॉलेशन

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति। कनाडा कौंसिल ऑफ़ आर्ट्स के सहयोग से

स्टक इन टाइम वॉल में फैसले लेने के अधिकार (एजेंसी) और तकलीफ़ दोनों के लिए साबुन का एक औज़ार के रूप में उपयोग किया गया है। एक कला वस्तु के रूप में बदल दी गई एक चीज़ के रूप में साबुन के राजनीतिक और घरेलू रिश्तों की पड़ताल करते हुए यह परियोजना शिक्षा की सियासत, दिमाग़ को उपनिवेश बनाने की प्रक्रिया और देह की सफ़ाई जैसे विषयों की तफ़तीश करती है। इस कलाकृति का विचार प्वाइंट फ़ोर प्रोग्राम से आया था, जो विश्व युद्ध के बाद शुरू हुआ एक औपनिवेशिक शैक्षिक कार्यक्रम था, जिसके तहत विकासशील राष्ट्रों को "अपनी मदद ख़ुद करने" में मदद करना था। 1949 में सोवियत संघ के प्रभाव से लड़ने के लिए शीत युद्ध की नीतियों के तहत ट्रूमन प्रशासन तकनीकी सहायता कार्यक्रम का विचार लेकर आया था, जिसका काम "विकासशील दुनिया" के देशों का "दिल और दिमाग़" जीतना था। इसके तहत विभिन्न क्षेत्रों में, और ख़ास कर खेती, उद्योग और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में अमेरिकी जानकारियों को साझा करने की योजना बनाई गई थी। इस कार्यक्रम ने विभिन्न क़िस्म की चीज़ों, मशीन और डॉक्यूमेंटरी फ़िल्मों आदि के ज़रिए विचारों को फैलाया। अवरज़मानी की यह दख़ल इस कार्यक्रम के प्रचार को एक जवाब है, और साबुन के हमेशा बदलते रहने वाले टुकड़े को इंसानी हालात पर एक मौन चिंतन के रूप में पेश करती हैं। यह साबुन कॉस्को से लिए गए, जो की बांग्लादेश की सबसे पुराणी साबुन बनाने वाली कंपनी है इस परियोजना को ट्रांसएंड संगठन के साथ मिल कर पूरा किया गया है, जिसमें बांग्लादेश में अनेक ट्रांसजेंडर, नॉन-बाइनरी, और क्वीयर समुदाय के साथ काम किया गया।

अवरज़मानी का काम वर्चस्वशाली और ज्ञान के क्षेत्रों में क़ायम ढाँचों को चुनौती देने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए वे उन नियमों और पद्धतियों को चुनौती देती हैं जिनका उपयोग समाज में सत्ता को गढ़ने में किया जाता है। विखंडन (डिकंस्ट्रक्शन), नक़ल (रेप्लिकेशन) और रूपांतरण (ट्रांस्फ़ॉर्मेशन) के विचारों पर आधारित उनका शोध इस बात की छानबीन करता है कि कैसे शिक्षा ज्ञान और सांस्कृतिक कामों की मनोवैज्ञानिक संरचनाओं को आकार देती हैं। मुख्यतः मूर्ति शिल्प और इंस्टॉलेशन में काम करते हुए वे अक्सर खेलों को एक ऐसे औज़ार के रूप में देखती हैं जिनसे सत्ता के ऐसे विभिन्न पहलुओं और संरचनाओं को समझने में मदद मिलती है, जो हर जगह मौजूद तो होते हैं, लेकिन हमारे साझे रिश्तों के भीतर छुपे हुए होते हैं।

गुआम बस

गुआम बस को दो भाई माइकल और जैक लुजान बेवाक्का चलाते हैं जो गुआम के काबेसा और बिट्टोट घरानों से आते हैं। जब दोनों भाई 1980 और 90 के दशकों में बड़े हो रहे थे, तब चमोरु से जुड़ी हुई बहुत कम सामग्री मौजूद थी। तब उनके अपने लोगों की कहानियाँ सुनाने या उन्हें अपनी भाषा सिखाने का कोई ज़रिया भी नहीं था। 2015 में जब मिशाएल एक विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर बने और चमोरु पढ़ाने लगे, और जैक ने एक कलाकार के रूप में करियर शुरू किया, तब उन्होंने फ़ैसला किया कि वे अपने हुनर का उपयोग किताबों, फ्लैशकार्डों, कॉमिक्स और गेम विकसित करने में करेंगे ताकि चमोरु कहानियों को सुनाया जा सके और चमोरु भाषा सिखाई जा सके। उनकी शुरुआती प्रेरणा यह थी कि आज के चमोरु बच्चों के पास अपनी धरोहर को जानने और उस पर सोचने के संसाधन होने चाहिए। अब तक उन्होंने बच्चों के लिए तीन द्विभाषी चमोरु-अंग्रेज़ी किताबें, और तीन कॉमिक्स प्रकाशित किए हैं। उन्होंने चमोरु सीखने वाले बच्चों के लिए फ्लैशकार्डों के तीन सेट तैयार किए हैं, और 2021 में चमोरु भाषा में बिंगो गेम जारी किया है।

आज गुआम बस का मिशन चमोरु भाषा को मज़बूती देना और चमोरु समुदाय के लोगों को सशक्त बनाना है। वे मुख्यतः रचनात्मक और अकादमिक कामों के ज़रिए इसे साकार करना चाहते हैं, जिनको चमोरु लोगों को अपनी धरोहर और एक समुदाय के रूप में अपनी भावी संभावनाओं के बारे में प्रेरित करने और शिक्षित करने के लिए बनाया गया है।

बच्चों की बनाई हुई चुनिंदा तस्वीरें हा बिक चुएन के आर्काइव और कॉन्टैक्ट शीट्स से, 1990 का दशक

जन्म 1925, शिनहुई। निधन 2009, हॉन्ग कॉन्ग

हा बिक चुएन के आर्काइव और कॉन्टैक्ट शीट्स से, 1990 का दशक

लोकेश खोड़के के माध्यम से, 2023

एशिया आर्ट आर्काइव, हॉन्ग कॉन्ग के सौजन्य से

---

990 के दशक में हॉन्ग कॉन्ग में होने वाली प्रदर्शनियों से लिए गए बच्चों की कलाकृतियों का यह दिलचस्प संकलन सार्वजनिक स्पेस में बच्चों की प्रदर्शनियों की एक समृद्ध संस्कृति को रेखांकित करता है। शिक्षक द्वारा दिया गया कोई ख़ास मुद्दा या कोई विषय हो, अपने आस-पास के जीवन पर आधारित रेखांकन बनाना हो या अपनी कल्पनाशीलता को उकेरना हो, ये अद्भुत और प्रभावशाली तस्वीरें आँखों, दिल और दिमाग़ पर जादू कर देती हैं। वेरी स्मॉल फीलिंग्स में उनकी मौजूदगी के साथ हम बच्चों की संस्कृति की दुनिया में आवाजाही कर रहे हैं, हम सार्वजनिक सांस्कृतिक संस्थानों में बच्चों की कलाकृतियों से रूबरू हो रहे हैं, और ऐतिहासिक रूप से और आज के वक़्त में भी सीखने वाले नन्हे बच्चों को कला दुनिया के सक्रिय भागीदारों के रूप में देख रहे हैं।

अपने मूर्ति शिल्प और प्रिंटमेकिंग के लिए मशहूर हॉन्ग कॉन्ग के कलाकार हा बिक चुएन अपने काम के साथ-साथ उन प्रदर्शनियों के फ़ोटोग्राफ़ भी लिया करते थे, जिनमें वे जाया करते थे। वे अपने पुस्तक कोलाजों को तैयार करने के लिए चीज़ें जुटाया करते थे। वेरी स्मॉल फ़ीलिंग्स में हम हा बिक चुएन द्वारा बच्चों की कला और प्रदर्शनियों के गंभीर दस्तावेज़ों को पेश करते हुए बेहद ख़ुशी महसूस कर रहे हैं। उनके आर्काइव का यह पहलू कला इतिहास और समकालीन कला में बच्चों की भूमिका को लेकर अहम सवाल पेश करता है।

प्रदर्शनियों से:

बीजिंग चिल्ड्रेन पेंटिंग एक्ज़ीबिशन (1990),
चिल्ड्रेन्स पेंटिंग ऑन प्रोटेक्टिंग द एनवायरमेंट (1991),
इंक पेंटिंग्स (1991),
चिल्ड्रेन्स चाइनीज़ पेंटिंग एक्ज़ीबिशन (1992),
गुआंग्ज़ो, हॉन्ग कॉन्ग एंड ताइवान चिल्ड्रेन्स मंकी पेंटिंग एक्ज़ीबिशन (1992),
चिल्ड्रेन्स आर्ट एंड क्राफ़्ट (1993),
इंग्लिश स्कूल चिल्ड्रेन्स वर्क्स (1993),
चाइल्डलाइक चिल्ड्रेन्स पेंटिंग '95 कल्चरल सेंटर (1995),
वर्ल्ड चिल्ड्रेन्स पेंटिंग्स (1998)

इरुषि तेन्नेकून

जन्म 1989, श्रीलंका। कोलंबो और लंदन में रहती और काम करती हैं।

स्टक इन टाइम वॉल, 2022-2023

एनिमेटेड फ़िल्में

स्टडिइंग ब्लू व्हेल्स, 2019 (समुद्री जीववि-ज्ञानी आशा दे वोस के साथ), 3 मिनट

द अंब्रेला थीफ़, 2020 (बच्चों की लेखिका और इलस्ट्रेटर सिबिल वेट्टासिंघे के साथ) 3 मिनट

कोलंबो वेटलैंड्स एंड द अर्बन फ़िशिंग कैट, 2022 (अन्य रत्नायका के साथ), 6 मिनट

इरुषि तेन्नेकून की जारी सीरीज़ एनिमेट हर श्रीलंका में रहने और काम करने वाली असाधारण महिलाओं के एक समूह से साक्षात्कार करती है। इसमें वे अपने काम और जीवन के सफ़र पर रोशनी डालती हैं। सीरीज़ का मक़सद उस पितृसत्तात्मक ढाँचे के विकल्पों की तलाश करना है, जिसे (मुख्यतः मर्दों द्वारा) औरतों पर अंकुश लगाने के लिए कायम किया गया है। स्टॉप मोशन और प्रयोगात्मक एनिमे-शन के तरीक़ों के जरिए, यह सीरीज़ एक समुद्री जीवविज्ञानी, बच्चों की एक लेखिका और इलस्ट्रेटर, एक वन्यजीव संरक्षणकर्ता, एक वकील और एक्टिविस्ट, एक परंपरागत नृत्यां-गना, एक वास्तुविज्ञानी, और एक आईसीटी उद्यमी की कहानियों में जान फूंकती है। सार्वजनिक स्पेस में कामकाजी महिलाओं के कम दिखने के मद्देनज़र, और भूरे रंग और काले बालों वाली भावी नायिकाओं और रोल मॉडलों के विचार पर अमल करते हुए तेन्नेकून की नायिकाएँ कला, विज्ञान और तकनीक के अलग-अलग क्षेत्रों से आती हैं जो अपने क्षेत्रों के स्थापित नियमों और पूर्वाग्रहों को चुनौती देती हैं। जब वे अपने सफ़र के बारे में बताती हैं, बताती हैं कि कैसे उन्होंने जोखिम उठाए, चुनौतियों को अपनाया, तब जीवन के फ़ैसलों और विकल्पों के आगे सीमाएँ खड़ी करने वाला व्यापक सामाजिक और पर्याव-रणीय परिवेश उजागर हो उठता है। साथ ही साथ दूसरे विषय भी सामने आते हैं जिसमें यह शामिल है कि कैसे कोलंबो के दलदली इलाक़े बाढ़ और बीमारियों को रोकते हैं।

एक कलाकार, प्रयोगशील ऐनिमेटर, और किस्सागो के रूप में काम करते हुए तेन्नेकून श्रीलंका की महिलाओं के लिए एक अधिक खुले और संभावना-शील भविष्यों की प्रेरणा देने की कोशिश करती हैं। तेन्नेकून ख़ुद अंग्रे-ज़ी अध्ययन के अकादमिक क्षेत्र से आती हैं, लेकिन उनका काम यूरोप-केंद्रित औपनिवेशिक परंपराओं से जस का तस उठा लेने के बजाए श्रीलंका की स्थानीय नायिकाओं को सामने ले आने की कोशिश करता है।

यानी रुसिका

जन्म 1978, सावोनलिन्ना। हेलसिंकी में रहती और काम करती हैं।

नॉट- क्नॉट (टू स्टेन), 2023

वुडकट एंड मिक्स्ड प्रिंटिंग टेक्निक्स

द इंकड एंड देयर इंकंडेसेंट रेवेरेन्स

साइट-स्पेसिफ़िक म्यूरल, 2022-2023

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति, फ़िनिश कल्चरल इंस्टीट्यूट से सहयोग प्राप्त

ये प्रतीक पहचाने हुए से लगते हैं, लेकिन वे अस्थायी हैं। वे इस हद तक फैलते, ऐंठते और विकृत होते हैं कि पहचान करना मुश्किल हो जाता है। वे पूरी गैलरी में फैले हुए हैं, मानो उन्होंने इसे गले से लगा रखा हो। एक इमारत पर बने किसी टैटू या ग्राफ़िटी के रूप में, इन भाषाई संकेतों में इंसानों, जानवरों और पेड़-पौधों की ख़ासियतें मिलने लगती हैं। ऐसा लगता है कि ये देखने वालों के लिए अभिनय कर रहे हैं, क्योंकि ये मुड़ते और घूमते हुए से महसूस होते हैं। अबूझपन, बिखराव और असंगति के ज़रिए, अपने पहले से तयशुदा मायनों को ख़ारिज करते हुए ये एक नए, वजूद के आज़ाद तरीकों की तरफ़ इशारा करते हैं। ये संकेत और प्रतीक भाषा की लड़खड़ाहटों और इसके नियम-क़ायदों को बहुत शोख़ी के साथ अपने में समेटे हुए हैं।

रुसिका का काम विभिन्न माध्यमों में फैला हुआ है, जिसमें वे न सिर्फ़ वीडियो, साउंड और अभिनय का उपयोग करती हैं, बल्कि वे मूर्ति शिल्प, म्यूरलों और वुडकट्स को भी शामिल करती हैं। विभिन्न और ऊपरी तौर पर बहुत अलग-अलग दिखने वाले कला रूपों के बीच एक साझी ज़मीन की खोज करते हुए, उनकी कला मायनों में बदलावों की, व्याख्या और प्रस्तुति के बीच रिश्ते और रिसावों की पड़ताल करती है, श्रेणियों और दोहरी दर्जेबंदियों (बाइनरीज़) पर सवाल करती है और भाषा, जीवंतता और अर्थ की सरहदों को बहुत दिलचस्प तरीकों से तोड़ती हैं।

जेस्सी रज़ाफिमानदिम्बी

जन्म 1995, मेडागास्कर। जेनेवा में रहते और काम करते हैं।

सि सोलेमाँ ले सॉविनिए पारवेने डु फुटुअर, 2022

पाई हुई वस्तु, चादर, काग़ज़ पर पेंसिल

कलाकार और साँ टिट्र, पेरिस के सौजन्य से

शाँ इरश्युट, 2022

पाई हुई वस्तुएँ, बुनी हुई फूस, चादर पर एक्रिलिक

कलाकार, निजी संग्रह, पेरिस और साँ टिट्र, पेरिस के सौजन्य से

इस प्रस्तुति को स्विस आर्ट्स काउंसिल प्रो एलवेसिया का सहयोग प्राप्त है

जेस्सी रज़ाफिमानदिम्बी की दिलचस्पी इसमें है कि वस्तुओं के पीछे कैसी कहानियाँ छिपी होती हैं और वे इंसानी व्यवहार के बारे में क्या बताती हैं। वे घर की अवधारणा को किसी रूपक की रूपरेखा के बतौर लेते हैं और स्वाद, जुड़ाव और सत्ता की अवधारणाओं पर सवाल उठाते हैं। उन्हें घरेलू वस्तुओं को जुटाने का शौक़ है, और उनके काम को "उपाख्यानों के अभिलेखागार" (आर्काइव ऑफ़ एनक्डोट्स) का नाम दिया गया है, जहाँ किसी वस्तु के पिछले मालिकों की रस्में और परंपराएँ (और उनके बनने की प्रक्रिया) की मुलाक़ात कलाकार के निजी इतिहास से होती है। यह इतिहास संकेतों से भरे हुए, मिले-जुले एक काम में सांस लेता है, जिसके भीतर मेडागास्कर में पले-बढ़े कलाकार के बचपन की यादें रची-बसी हुई हैं। कलाकार के काम में कपड़ा (टेक्स्टाइल) बार-बार आने वाली एक सामग्री है। कपड़ा पेंटिंगों से लेकर चादरों तक सजावट संबंधी रिवाज़ों को आपस में जोड़ता है, और रंगमंच और जीवन में अफ़सानों और सच्चाइयों को छुपाने और उन्हें उजागर करने में भूमिका अदा करता है। ये काम कलाकार के बचपन के अनुभवों से उतने ही प्रेरित हैं, जब वे मेडागास्कर में एक आल्टर ब्वॉय हुआ करते थे, जितने कि जेनेवा में उनके समकालीन अनुभवों से। इस नए शहर के अजनबी घर में रहते हुए उनकी माँ पुराने जीवन की ईसाई रस्मों पर अमल करती हैं, जब वे पारिवारिक रस्मों के लिए वेदियों को सजाती हैं। कलाकार इस बात से मुग्ध हो उठते हैं कि कैसे अर्थ एक से दूसरी चीज़ में आवाजाही करते हैं। अनेक धार्मिक रस्मों में उपयोग होने वाला सफ़ेद कपड़ा पवित्रता का प्रतीक है। यह उच्च आध्यात्मिक ताकतों और दूसरे इंसानों के साथ प्रतिबद्धताओं पर मुहर लगाने का काम भी करता है, जैसा कि शादी की रस्म में हुआ करता है। मायनों की यह आवाजाही चीज़ों और हालात के बदलाव की हमारी उम्मीद का हिस्सा भी है। इन कृतियों में कलाकार फूस की व्याख्या रस्म की एक वस्तु के रूप में करते हैं, जो एक ऐसी क़िस्म की कीमियागरी है जहाँ "ग़रीब चीज़ें" महज यकीन की एक कार्रवाई के ज़रिए क़ीमती बन सकती हैं।

रज़ाफिमानदिम्बी कला रचने के दौरान कई अनुशासनों को अपनाते हैं, और उनमें पेंटिंग, ड्रॉइंग, इन्सटॉलेशन और परफ़ॉर्मेंस शामिल हैं। अक्सर ही ये अलग-अलग गतिविधियाँ आपस में मिल जाती हैं, और हम कलाकार को बिखरे हुए सजावटी वस्तुओं और कपड़ों में फेर-बदल करते हुए पाते हैं, जिनसे एक कलाकृति अपनी संरचना से आगे निकल जाती है। इन विस्तारों के ज़रिए मूर्तिकला और पेंटिंग के बीच में एक टकराव उजागर होता है, जिसे कलाकार साकार करता है। उनमें संस्कृति के टकराव भी दिखाई देते हैं। वे अंदरूनी साज-सज्जा के इतिहास पर ख़ास ध्यान देते हैं, साथ ही "अच्छे तौर-तरीकों" की सामाजिक परंपराओं पर भी, जो जीवन के रूढ़ तरीक़ों के साथ परंपरागत रूप से जुड़ी हुई हैं और वर्गवादी बुर्जुआ व्यवस्था द्वारा जिन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

जोयदेब रोआजा

जन्म 1973, खागड़ाछड़ी। खागड़ाछड़ी में रहते और काम करते हैं।

जेनरेशन-विश-यिल्डिंग ट्रीज़ एंड एटॉमिक ट्री, 2009 - अब तक

फ़ोटो ड्रॉइंग कोलाज प्रिंट

कलाकार के सौजन्य से

तरल शिकड़, लिक्विड रूट्स, 2022

काग़ज़ पर कलम और रंगीन पेंसिल

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन के संग्रह से

गो बैक टू रूट्स 39, 2022

गो बैक टू रूट्स 43, 2022

इंक पेन ऑन पेपर

किरण नाडर म्यूजियम ऑफ़ आर्ट के संग्रह से

चिट्टगोन्ग हिल ट्रैक्ट्स के त्रिपुरा समुदाय से आने वाले जोयदेब रोआजा का बचपन ज़्यादातर बांग्ला-देशी कलाकारों जैसा नहीं था। बचपन में वे पहाड़ियों पर फ़ौजी बूटों की छापों को देखते हुए बड़े हुए, जहाँ तोपें उनके सपनों का पीछा करती थीं। जेनरेशन-विश-यिल्डिंग ट्रीज़ उन यातना भरी यादों को एक जवाब है। यह सीरीज़ 2009 में अपनी बेटी के साथ एक परफ़ॉर्मेंस के रूप में शुरू हुई थी। उनके परफ़ॉर्मेंस रेखांकनों में बदले और उनके रेखांकन परफ़ॉर्मेंस में। ये फोटो-ड्रॉइंग कोलाज प्रिंट मुख्यतः इस ख़्वाहिश से पैदा हुए हैं कि परफ़ॉर्मेंस के दस्तावेज़ और ड्रॉइंगों को एक साथ एक काम के रूप में देखा जाए।

रंगमती में रोआजा के पहाड़ी गाँव में पानी का अकेला स्रोत एक छोटी-सी धारा है जो दो पहाड़ियों के बीच में बहती है, लेकिन विकास के नाम पर, प्राकृतिक जंगल काट दिया गया और उसकी जगह पर सागवान के पौधे रोपे गए। इसके नतीजे में इस पहाड़ी इलाक़े की अनेक धाराएँ सूखने लगी हैं। बचपन में जिस धारा में रोआजा नहाते थे, अब उसमें बारिश के मौसम को छोड़ कर पानी नहीं आता है। यही वजह है कि लिक्विड रूट्स की यह झीरी (धारा) उनकी ड्रॉइंगों में हमेशा आगे बढ़ती रहने वाली जड़ों में बदल जाती हैं, जो एक अधिक स्वायत्त भविष्य की उम्मीद के साथ बह रही हैं।

रोआजा में आपस में गुंथे हुए परफ़ॉर्मेंस, पेंटिंग, और ड्रॉइंग का काम मिलता है, जो बांग्लादेश के चिट्टगॉन्ग हिल ट्रैक्ट्स के चुनौती भरे सामाजिक और राजनीतिक मंजर को रेखांकित करता है। उनके काम स्थानीयता के अनुभवों से जुड़े हुए हैं, और अक्सर ही स्थानीय लोगों की अपनी ज़मीन और अपनी पहचान और हक़ों की लड़ाई के साथ गहरे और आपसी रिश्ते पर ज़ोर देते हैं। उनका काम एक मज़बूती देने वाला आह्वान है जो स्वायत्तता की और अल्पसंख्यक संस्कृतियों को बचाने की माँग करता है।

कबीर अहमद मासूम चिश्ती

जन्म 1976, नारायणगंज। ढाका, बांग्लादेश में रहते और काम करते हैं।

द स्टोरी ऑफ़ वाटर एंड लेबर पेन, 2022-2023

काग़ज़ पर चारकोल और वाटरकलर, परफ़ॉर्मेंस

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति

रेखांकनों और शारीरिक गतिविधि के ज़रिए कबीर अहमद मासूम चिश्ती पद्मा और ब्रह्मपुत्र नदियों के संगम पर पैदा होने वाली बाढ़ की एक कहानी सुनाते हैं। बांग्लादेश की सैकड़ों नदियों के किनारे रहने वाले लोग हमेशा उस गाद पर निर्भर करते हैं जो हिमालय से इतनी दूर चल कर नदी के साथ आती है। इस इलाक़े की मिथकीय घटनाओं और किरदारों को आपस में जोड़ते हुए चिश्ती ने डेल्टा की और बाढ़ लाने की इसकी कुदरती परिघटना की अपनी दास्तान बुनी है।

चिश्ती परफ़ॉर्मेंस, कविता, रेखांकन और एनिमेशन में काम करते हैं। नारायणगंज और ढाका में रहते हुए वे अपने कला के ज़रिए इंसानी मनोभावनाओं की गहराइयों की तलाश करते हैं। अक्सर ही मन और शरीर, शरीर और पदार्थ, मिथक और हक़ीक़त, समय और स्थान के बीच रिश्तों के नाज़ुक ताने-बाने के ज़रिए काम करते हुए उनकी कला रोज़मर्रा के परिवेश में काल्पनिक स्पेस, सपनीली दुनियाओं और समांतर यथार्थों के लिए जगह बनाती है।

केल्ली सिन्नापाह मेरी

जन्म 1981, गुआदेलूप। गुआदेलूप में रहती और काम करती हैं।

नोटबुक 12: द फेबल्स ऑफ सनब्रास, 2022

काग़ज़ पर एक्रिलिक

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति

कलाकार और आइकॉन गैलरी के सौजन्य से

नोटबुक (2) ऑफ़ नो रिटर्न, 2018

काग़ज़ पर एक्रिलिक

अल्बर्टाइन कॉप के संग्रह से

साइंस फ़िक्शन के लेंस से केली सिन्नापाह मेरी अक्सर उस दुनिया की पड़ताल करती हैं जिसे स्त्री से जोड़ कर देखा जाता है। वे फूलों से जुड़े विषयों, नर्म सामग्री, परीकथाओं के साथ काम करते हुए ऐसी तकनीकों का इस्तेमाल करती हैं जो उनके तीखे और राजनीतिक रूप से गंभीर विषय-वस्तु के साथ एक विरोधाभास-सा बनाते हैं। इस टकराव से, सिन्नापाह मेरी अपनी एथनिक धरोहर का पता लगाती हैं, और साथ ही एक ऐसे इंसान के रूप में अपनी जड़ों पर सवाल करती हैं जो दो दुनियाओं के बीच में उलझा हुआ है। वे 'नेग्रीट्यूड' और 'कुलीट्यूड' की अवधारणाओं का सामना करती हैं। कैरिबियाई कवि खल तोराबुल्ली द्वारा शुरू किया गया 'कुली' एक अपमानजनक नाम है जो कैरिबिया में प्रवास करने वाले भारतीयों को दिया गया था। सिन्नपाह मेरी ने 'सनब्रास' नाम की एक नन्ही लड़की का एक किरदार रचा है जो शायद कलाकार के बचपन का प्रतिनिधित्व करती है। यह बोन्ना की बहन है जो बंगाल की खाड़ी पार करने के बाद ख़ुद को दुनिया के एक दूसरे ही हिस्से कैरिबियन में पाती है। वह एक नायिका के रूप में अतीत, वर्तमान और भविष्य के साथ जुड़ने की कोशिश करती है।

सिन्नपाह मेरी रेखांकन, पेंटिंग, मूर्तिकला और ग़लीचों के ज़रिए छवियाँ बनाती हैं, जिनमें उनके बचपन की कहानियाँ और महाकाव्य बुने हुए होते हैं। उनमें क्रूरता और जादुई आकर्षण का मेल होता है, और वे उत्तर-औपनिवेशिक असमंजस और ख़ुद की तलाश के प्रति एक प्रतिरोध की पड़ताल करती हैं। वे भारतीय अनुबंधित मजदूरों की एक वंशज के रूप में अपनी एथनिक धरोहर को अपनाती हैं और यौनिकता, शिल्प के प्रति प्यार और अपने आसपास दिखने वाले सामाजिक अन्याय को उठाते हुए ऐसी नन्ही-सी दुनियाएँ बनाती हैं जिनमें साइंस फ़िक्शन और परीकथाओं का मिज़ाज रचा बसा हुआ है।

लापदियांग सिएम

जन्म 1988, शिलॉन्ग। शिलॉन्ग में रहती और काम करती हैं।

लाएतियाम, 2022-2023

वीडियो, लूप, 15 मिनट

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन, किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट, आर्ट दुबई, गोएथे इंस्टिट्यूट नई दिल्ली और जकार्ता द्वारा कमीशन की गई कृति

यह लापदियांग सिएम का शारीरिक परफ़ॉर्मेंस है, जिसे दर्शक ढाका आर्ट समिट के पहले सप्ताहांत के दौरान आमने-सामने (लाइव) देख सकते हैं, और वीडियो के ज़रिए भी। यह परफ़ॉर्मेंस एक खासी लोककथा ऊ सिएर लापलांग पर आधारित है, जिसमें एक हिरण की कहानी कही गई है। हिरण आज के बांग्लादेश के समतल मैदानों से चलते हुए मेघालय के खासी हिल्स तक पहुँचता है ताकि ऊ जांगेव जठांग नाम की एक जंगली जड़ी खोज सके। लेकिन वहाँ शिकारी उसे पकड़ कर मार डालते हैं। पीछे से हिरण की माँ जब अपने बेटे को खोजते हुए पहाड़ी पर चढ़ती है तो उसे अपने बेटे की लाश दिखती है। उससे एक विलाप उठता है, यह एक रुलाई है जिसके बारे में कहा जाता है कि इसी आवाज़ ने खासी समुदाय के लोगों को मातम करना और अपने त्रासद दुखों का सामना करना सिखाया है। यह परफ़ॉर्मेंस स्मृति और क़िस्सागोई पर, लैंड-स्केप पर, और वेदना की भावना पर केंद्रित है, जिसके मूल में सीमा पार करने की कहानी। इसमें खासी समुदाय के हालात की झलक मिलती है। ऊ लापालांग के मासूम और साहस भरे जज़्बे, और अपने जाने हुए भूगोल से परे जाकर सरहदों के पार उसके सफ़र को जिस तरह सिएम ने साकार किया है, वह अनेक स्तरों पर हमें छूता है। साइट पर बनाए गए परफ़ॉर्मेंस वीडियो में सोहरा, सोहबर (बांग्लादेश सीमा और सोहरा के बीच का गाँव), और वाहरेव (मेघालय और बांग्लादेश के बीच बहने वाली नदी) को दिखाया गया है, जहाँ आक्रामक शहरीकरण, खनन, और दूसरे हस्तक्षेपों के चलते भारी बदलाव आ रहे हैं और चीज़ें मिटती जा रही हैं।

सिएम का काम बहुत शारीरिक है, वे रंगमंच में अपने अलग-अलग क़िस्म के प्रशिक्षण से ली गई तकनीकों का इस्तेमाल करती हैं। वे एक समका-लीन नज़रिए से इस खासी लोककथा को पेश करती हैं, और उस पर एक नई निगाह भी डालती हैं। वे जेंडर और पहचान से जुड़े सवालों को उठाती हैं। अपनी रंगमंचीय अभिव्यक्ति को अपनी अल्पसंख्यक, मातृसत्तात्मक समुदाय की वाचिक परंपराओं में देखती हैं, जहाँ से वे लोक को एक संसाधन के रूप में और प्रदर्शन को वाचिक को अभिव्यक्ति देने वाले एक स्वरूप के बतौर इस्तेमाल करती हैं। उनके यहाँ अभिनय का मतलब है उन परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने में हिस्सेदारी करना।

लीला मुखर्जी

जन्म 1916, हैदराबाद। निधन 2002, नई दिल्ली।

‘द पीकॉक स्टेज’ म्यूरल, वेल्हैम्स ब्वॉएज़ स्कूल, 1968।

फ़ोटोग्राफ़ 2023 में लिया गया। मृणालिनी मुखर्जी फ़ाउंडेशन के सौजन्य से

मृणालिनी मुखर्जी फ़ाउंडेशन आर्काइव से ली गई आर्काइवल सामग्री

लकड़ी से बनी छह मूर्ति शिल्प कृतियाँ, 1950 से 1970 के दशक तक

किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ आर्ट के संग्रह से

डांस II, 1998

एचिंग

कंचन चन्देर के संग्रह से

वेरी स्मॉल फ़ीलिंग्स (वीएसएफ़) प्रदर्शनी एक ऐसी जगह तैयार करती है, जहाँ एक अग्रणी मूर्ति शिल्पी और शिक्षिका लीला मुखर्जी के आजीवन काम को देखा, समझा, और उस पर विचार किया जा सके। उनकी कलाकारी, और कला शिक्षण में उनके योगदान पर अभी भी बहुत कम शोध हुआ है, और यह पुरुष-केंद्रित आधुनिकता के भव्य हाव-भावों में दब कर रह गया है। उनका काम, और उनके द्वारा लाए जा रहे बदलाव छोटे, अंतरंग, अनियमित थे और लगातार अपने परिवेश के साथ एक संवाद बनाए रखते थे। उनका करियर कला निर्माण में एक ऐसे बदलाव की निशानी है, जो उनके घरेलू जीवन, उनके समर्पित अध्यापन, और कला की दुनिया में उनके सफ़रनामे के बीच एक रिश्ता क़ायम करता है। इस पूरी आवाजाही में वे जीवन भर सीखती रहीं। । हम यहाँ रोज़मर्रा के किस्सों को सुनते हैं, हवालों पर गौर करते हैं, और लीला मुखर्जी के छात्रों, सहकर्मियों, दोस्तों की यादों से जो कुछ भी जमा किया जा सकता है, उसका स्वागत करते हैं, ताकि एक शिक्षिका और संसाधनों की अपार धनी इस शख़्सियत के बारे में ब्योरों को जुटाया जा सके।

आर्ट रूम की उनकी कक्षाएँ महज कमरे तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि बाहर भी चला करती थीं, जिनके तहत वे अपने छात्रों को अक्सर स्कूल के आस-पास की पहाड़ियों के स्केच बनाने को कहती थीं। साथ ही, मुखर्जी की अपनी कला रचना की जगह भी उनके छात्रों के लिए बनी जगहों में ही विकसित होती थी और स्कूल की दीवारों के भीतर ही स्थायी रूप से बस गई थी। वीएसएफ़ ने लीला के लिए जिस जगह की पुनर्परिकल्पना की है, उसकी निशानी के लिए लीला के एक काम को एक धुरी की तरह उपयोग किया गया है। यह काम है ‘द पीकॉक स्टेज’ नाम का म्यूरल जो उन्होंने स्कूल की संस्थापक मिस। ओलिफेंट की तरफ़ से वेल्हैम्स ब्वॉएज़ स्कूल में 1968 में बनाया था। स्कूल के पूर्व छात्र, उनके अपने छात्र और पूरा स्कूल इसे “यादगार मजमों, सभाओं और भाषणों” की एक प्रतिष्ठित जगह के रूप में याद करता है, जहाँ “मोर चुपचाप और बड़े सब्र के साथ, अपनी पूरी भव्यता में, पंखों को पसारे सबके स्वागत के इंतज़ार में है”। अपने शाब्दिक और काव्यात्मक दोनों ही रूपों में यह एक ऐसा मंच बन जाता है, जहाँ हम उनके आर्काइव और उनके काम की प्रस्तुतियों पर विचार कर सकते हैं। प्रदर्शनी में इस पीकॉक स्टेज के साथ-साथ उनके छात्रों द्वारा बनाए गए रेखांकनों, स्कूल नोटिस-बोर्ड प्रदर्शनियों, साबुन और लकड़ी से बनाई गई नन्ही आकृतियों, और ख़ुद मुखर्जी द्वारा अपने कामों की तस्वीरों को भी सजाया गया है।

इस प्रस्तुति में लीला मुखर्जी के बनाए हुए लकड़ी के छह मूर्ति शिल्प भी पेश किए गए हैं, जिनमें साबुन के मूर्ति शिल्प के पूरक के रूप में जानवरों की चार आकृतियाँ भी है जिन्हें हम तस्वीरों में भी देख सकते हैं। इन मूर्ति शिल्पों में वे दक्षिण एशिया के ग्रामीण कलाशिल्पियों की खिलौने बनाने की परंपरा और संस्कृति से प्रेरणा लेती हैं, साथ ही साथ वे प्रकृति और शरीर के अपने समर्पित अध्ययन का भी उपयोग करती हैं, जिसे उन्होंने कला भवन, शांतिनिकेतन में अपनी शिक्षा के दौरान हासिल किया था। मुखर्जी ने लकड़ी को गढ़ने का कौशल मशहूर उस्ताद कलाकार श्री कुलसुंदर से तब सीखा जब वे 1948-1950 के दौरान काठमांडू, नेपाल रहने गई थीं। इस तरह वे अपने समय की गिनी-चुनी महिला मूर्ति शिल्पियों में से एक बनीं, जो लकड़ी और आगे चल कर कांस्य के साथ सक्रिय रूप से काम कर रही थीं।

इस प्रस्तुति में शामिल कृतियाँ मिल कर एक कलाकार और एक शिक्षक के रूप में उनके काम के बीच की लकीरों को मिटा देती हैं। उन्होंने बच्चों को कला सिखाने के काम को किसी कक्षा में एक अलग-थलग काम के रूप में नहीं लिया, बल्कि यह उनके लिए एक प्रयोगशाला थी, जिसमें सीखने की पद्धतियों और संरचनाओं के साथ प्रयोग किए जाने थे, जिसमें कौशल और तकनीक को दूसरों तक पहुँचाने के साथ-साथ कला के ज़रिए दुनिया में भागीदारी करने का तरीक़ा भी सिखाना था। लीला मुखर्जी ने 1953 में देहरादून में वेल्हैम प्रीपेरटरी स्कूल में काम करना शुरू किया, और 1974 तक उन्होंने उसी स्टूडियो में अपनी कला रचना भी जारी रखी, जहाँ उनके छात्र काम करते थे।

कला भवन, शांतिनिकेतन से स्नातक मुखर्जी ने बहुत पहले से ही प्रकृति और जीवन के अध्ययन के टैगोर के दर्शन को अपना लिया था, और उन्होंने कला पाठ्यचर्या के विकास में और कक्षाओं में भी इस व्यवहार पर अमल करना जारी रखा। वे नंदलाल बोस और रामकिंकर बैज की छात्र थीं। 1944 में उन्होंने कलाकार बिनोदबिहारी मुखर्जी से शादी की और 1947 में हिंदी भवन, शांतिनिकेतन में मध्यकालीन भारतीय संतों के जीवन पर आधारित मशहूर म्यूरल की रचना करने में उनकी मदद की।

लोकेश खोड़के

जन्म 1979, भोपाल। नई दिल्ली में रहते और काम करते हैं।

कॉमिक सीरीज़ द स्पीकिंग मा-उंटेन से चुने हुए पन्ने, 2022-2023

एशिया आर्ट आर्काइव के शोध और सामग्री के साथ

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट और एशिया आर्ट आर्काइव द्वारा कमीशन की गई कृति

आर्काइव को लेकर खोड़के की कल्पनाशीलता और क़िस्सागोई में उनकी दिलचस्पी को उनके कामों में प्रमुखता से देखा जा सकता है। यह उनके काम का वह हिस्सा है, जिसमें वे बच्चों की कला की पड़ताल करते हैं, स्थानीय कला शिक्षकों के आजीवन काम को रेखांकित करते हैं और बच्चों की कला और शिक्षा पर केंद्रित संस्थागत इतिहासों को पेश करते हैं। खोड़के ने यहाँ अपनी काल्पनिक कॉमिक सीरीज़ से कुछ चुने हुए पन्ने पेश किए हैं, जिनमें कलाकार ने हास्य का इस्तेमाल करते हुए अलग-अलग जगहों पर विभिन्न कला शैलियों और संवादों के बारे में समृद्ध जानकारी जुटाई है। वे हॉन्ग कॉन्ग, भोपाल, और 1990 के दशक में भारत में बच्चों के लिए कॉमिक्स की दुनिया के नक़्शे को जोड़ते हैं, जिसमें वे ऐसी बातें और घटनाएँ पिरोते चलते हैं जिनके तार उनके पुश्तैनी शहर भोपाल में कला की दुनिया को लेकर उनकी शुरुआती यादों से भी जुड़े हैं। कॉमिक्स का नायक भोपाल से आने वाला एक लड़का है, जो अलग-अलग समय और स्थानों की अपनी यात्राओं के ज़रिए काल्पनिक और सचमुच के किरदारों से मिलता है। वह 1990 के दशक के शुरुआती दौर में हॉन्ग कॉन्ग में कलाकार हा बिक चुएन से मिलता है। वह भारत, हॉन्ग कॉन्ग और अमेरिका में कॉमिक्स की दुनिया के मशहूर किरदारों से मिलता है, जिसमें एक किरदार नागराज का भी है। अतीत से चल पर उसका सफ़र मौजूदा दौर तक आता है। ये मुलाक़ातें इस लड़के की कल्पना में कई विचारों और सवालों को जन्म देती हैं।

इस कॉमिक सीरीज़ का विकास एशिया आर्ट आर्काइव में 2021 में खोड़के की ऑनलाइन आर्टिस्ट-एडुकेटर रिसर्च रेज़ीडेंसी से शुरू हुई थी। वहाँ वे कलाकार हा बिक चुएन के फ़ोटो कॉन्टैक्ट शीट्स से बहुत प्रेरित हुए थे। इनमें चुएन ने 1990 के दशक में हॉन्ग कॉन्ग में बच्चों की कलाकृतियों और प्रदर्शनियों की तस्वीरें लेकर उनका बड़े लगन के साथ डॉक्यूमेंटेशन किया था। तस्वीरों से भरी हुई इस शोध सामग्री ने खोड़के को कलाकारों रोन्नी वोंग लाल केउंग और प्रोफ़ेसर ऑस्कर हो के साथ कॉमिक्स, बच्चों और कला के बारे में संवादों के लिए प्रेरित किया। वे कलाकार विनय सप्रे से भी मिले जिन्होंने 1980 के दशक में जवाहर बाल भवन में पढ़ाया और काम किया था। सप्रे ने पूरे जीवन बच्चों और किशोरों को एयरोमॉडलिंग और कला रचना सिखाई है। आर्काइव में मिली सामग्री पर काम करते हुए, और अपने शोध को लोकप्रिय विज़ुअल सामग्री के साथ जोड़ते हुए, जिसमें बच्चों की सचित्र पत्रिकाएँ, कॉमिक्स, फ़िल्में, ख़बरें, शामिल हैं, खोड़के अलग-अलग तारों को आपस में जोड़ते हैं। उनकी योजना कॉमिक को आगे बढ़ाने की है और वे भारत में बाल भवनों पर शोध कर रहे हैं।

खोड़के क़रीब दो दशकों से बच्चों की किताबों और कॉमिक्स के लिए चित्र बनाते आ रहे हैं। कॉमिक बुक कलाकार और विज़ुअल आर्ट शिक्षक के रूप में उन्होंने ब्लू जैकल की सह स्थापना की है। यह विभिन्न उम्र के सीखने वालों के लिए सचित्र कहानियाँ, कॉमिक्स, चित्रों की किताबें, इंटरेक्टिव टूल, और प्रोग्राम बनाने और प्रकाशित करने का एक मंच है। उन्होंने ड्रॉइंग रेज़िस्टेंस नाम की एक हिंदी-/अंग्रेज़ी ज़ाइन (निजी लघु पत्रिका) की सह-स्थापना की है और इसका सह-संपादन करते हैं, जो मौजूदा सामाजिक-राजनीतिक माहौल पर विचार करती है।

मर्ज़िया फ़रहाना और 270 बांग्लादेशी छात्र

जन्म 1985, ढाका। ढाका और रिचमंड में रहती और काम करती हैं।

द इक्विलिब्रियम प्रोजेक्ट, 2022-2023

जागो फाउंडेशन, बांग्लादेश से जुड़े 270 छात्रों (कक्षा 6 से 9 तक) के साथ मिल कर बनाया गया कई हिस्सों वाला इंस्टॉलेशन

यह प्रस्तुति यूनिलीवर के अतिरिक्त सहयोग से संपन्न हुई है

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति

मर्ज़िया फ़रहाना ने 2017 में ढाका आर्ट समिट और स्कूली छात्रों के साथ मिल कर जो काम शुरू किया था, द इक्वि-लिब्रियम प्रोजेक्ट उसी की एक अगली कड़ी है। उन्होंने जागो फ़ाउंडे-शन के लर्निंग प्रोग्रामों से जुड़े बच्चों के साथ अनेक ऑनलाइन कार्यशाला-एँ कीं। ये बच्चे बांग्लादेश के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले थे, जिनमें ढाका, हबीबगंज, रंगपुर, दिनाजपुर, टेकनाफ, बंदरबन और गायबंधा शामिल हैं। कई महीनों तक साथ मिल कर काम करते हुए उन्होंने इस इंस्टॉलेशन का विकास किया है, और यह बांग्लादेश और दूसरी जगहों पर कलाकारों द्वारा चलाई जाने वाली शिक्षण संबंधी पहलक़दमियों के ऐतिहासिक उदाह-रणों से प्रेरणा लेती है। कला-कार-शिक्षक की शख़्सियत पर विचार करते हुए, और समाज, कला-निर्माण और बच्चों के बीच रिश्ते को समझने की कोशिश करते हुए, फ़रहाना इस बात की छानबीन करती हैं कि संसा-धनों से महरूम हालात में सी-खने-सिखाने की प्रक्रिया के क्या मायने हो सकते हैं। जागो से जुड़े, वंचित और दूर-दराज़ स्थित बच्चों के साथ फ़रहाना का काम खोजपूर्ण कला रचना के पहलुओं पर सवाल करता है और उन्हें सामने लाता है, ताकि उन लोगों के लिए मुक्ति और प्रतिरोध का एक मंच तैयार किया जा सके जो समाज में अलग-थलग कर दिए गए हैं। यह वीडियो डॉक्यूमेंटेशन ढाका आर्ट समिट 2023 में दिखाए गए उस प्रोजेक्ट के कुछ अंश दिखाती है।

फ़रहाना अनेक माध्यमों में काम करती हैं, जिनमें पेंटिंग, इन्सटॉलेशन और वीडियो शामिल हैं। उनका काम समय और स्थान पर आधारित होता है। वे मिल कर काम करने, और भा-गीदारियों को बढ़ावा देती हैं। वे कला के ऐसे सह-निर्माण की संभावनाओं को मज़बूती देने की कोशिश करती हैं जो संवेदना और मुक्ति के नए रास्ते तलाशें। उनकी कला रचना में शिक्षण का यह मोड़ सामाजिक और पर्यावर-णीय न्याय को आगे बढ़ाने पर और हाशिए पर धकेले गए असुरक्षित समुदायों को सशक्त बनाने पर ज़ोर देता है।

मैथ्यु कृषणु

जन्म 1980, ब्रैडफर्ड। लंदन में रहते और काम करते हैं।

माउंटेन लेक, 2019

ऑयल ऑन कैनवस

किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के संग्रह से

सफारी, 2012

ऑयल एंड एक्रीलिक्स ऑन कैनवस

अमृता झावेरी के संग्रह से

फारेस्ट लेक, 2019

ऑयल ऑन कैनवस

स्तुति और अर्जुन अगरवाल के संग्रह से

“अतीत एक विदेशी ज़मीन है: वहाँ चीज़ें अलग तरह से की जाती हैं,” यह पंक्ति है ब्रिटिश उपन्यासकार एलपी हर्टली की, जिसने मैथ्यु कृषणु की सीरीज़ अनदर कंट्री के लिए प्रेरणा का काम किया। यह इस बात पर केंद्रित है कि कलाकार जिस अतीत को एक भौतिक स्पेस के रूप में देखता है, उसके लिए अपने उस अतीत की पुनर्संरचना और पुनर्कल्पना करने में यादों की क्या भूमिका है। यह एक अनजानी जगह है जो कहीं और मौजूद है। वह ऐसी कहानियाँ सुनने के लिए तस्वीरें बनाते हैं, जो जानी-पहचानी भी हैं और अजनबी भी हैं। इसमें वे एक बंगाली और एक अंग्रेज़ ईसाई मिशनरी की मिली-जुली नस्ल वाले एक बच्चे के रूप में बांग्लादेश में अपने बचपन से एक रिश्ता जोड़ते हैं, जहाँ से बारह साल की उम्र में वे इंग्लैंड चले आए थे। कृषणु अपने मुख्य किरदारों को यूरोपीय उपनिवेश-वाद की अब तक जारी विरासत के बरअक्स पेश करते हैं और दिखाने की कोशिश करते हैं कि कैसे इसका रिश्ता नस्ल, इतिहास, धर्म और अपनी जड़ों के विचारों से जुड़ता है। उनकी तस्वीरों का मुख्य विषय बच्चों के रूप में अक्सर वे ख़ुद या उनके भाई होते हैं।

कलाकार के मुताबिक़, इन दो बच्चों की तरह, भूरे बच्चों की आकृतियों का “दुनिया भर में गैलरियों की दीवारों पर होना पश्चिमी कला के भीतर भूरी आकृतियों, और बच्चों के ऐतिहासिक निशक्तीकरण को एक जवाब है।” उनके चित्र एक नॉस्टैल्जिक शैली में बने होते हैं, जिनमें बच्चों जैसी हैरानी और कौतूहल का भाव होता है। ऐसा करते हुए वे अपने बचपन की भावना-ओं और परिवेश को फिर से महसूस करना चाहते हैं, उस पर फिर से गौर करना चाहते हैं - जो अभी भी एक वयस्क के रूप में उनके भीतर ज़िंदा है। यह पेंटिंग दो भाइयों के बीच रिश्ते की पड़ताल करती है। ऐसा करने के लिए वे बड़े और छोटे भाई की देहभा-षा की मदद लेते हैं। इसमें वे दोनों कश्मीर का एक नजारा देख रहे हैं (या फिर इसी सीरीज़ के दूसरे कामों में बंगाल की किसी जगह को)। एक इकाई के रूप में मिल कर वे ताकतवर होते हैं, लेकिन वे अपने बीच में एक संघर्ष को भी पाते हैं। पेंटिंग में नज़ारे को देखने के बजाए वे हमें उस मंज़र के हिस्से के रूप में देखते हैं। वे अती-तमोह में डूबी हुई एक बेचैनी की रचना करते हैं, जिसमें दोनों लड़के भी शामिल हैं और हम भी। किशोर उम्र की मासूमियत से गुज़रते हुए कृषणु अपने देखने वालों में संवेदना भरते हैं और उनके साथ इस तरह एक रिश्ता कायम करते हैं जिसमें एक किस्म की बेचैनी भी है।

सफ़ारी में, जो बांग्लादेश में स्थित है, दो भूरे भाइयों को दूर एक हाथी और क़रीब में गोरे पिता की एक प्रभावशा-ली आकृति के बीच में दिखाया गया है, जो उस जगह से उतना ही अजनबी है। हताश दिखने वाले बच्चों को समझ में नहीं आ रहा है कि वे अपने तीर-धनुष का निशाना किसको बनाएँ। कृषणु के चित्रों में पृष्ठभूमियाँ उथली होती हैं और एक सीमा के बाद अक्सर अमूर्त हो जाती हैं। इससे लगता है कि पेंटिंग एक अस्थायी सीमा रेखा पर क़ायम है। उनकी पेंटिंग एक फ़ोटोग्राफ़ की सटीक बारीकी और एक अनगढ़पन के बीच में कहीं मौजूद होती हैं। वे तस्वीरों पर काम करने के लिए अनेक स्रोतों का एक साथ उपयोग करते हैं, जिसमें वे एक तरफ़ अपनी कल्पना के आधार पर काम करते हैं, जिससे वे स्केच बना कर शुरुआती रेखांकन तैयार करते हैं। वहीं वे अतीत के इन दृश्यों से परिचित लोगों के फ़ोटोग्राफ़ों का भी उपयोग करते हैं, और साथ ही वे पेंटिंग के इतिहास से भी प्रेरणाएँ लेते हैं। वि-शिष्टता की सीमा से उनके इन्कार करने से “समय से बाहर” एक जगह की संभावना खुलती है और यह देखने वालों को उनके काम में अपने अनुभवों और अपने मायनों को ले आने के लिए बुलाती है।

मोंग मोंग शो

जन्म 1989 मोहेशखाली। ढाका और कुनिमिंग में रहते और काम करते हैं।

सॉन्ग्स ऑफ़ द फिशरमेन्स चिल्ड्रेन, 2022-2023

राइस पेपर पर स्याही

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति

मोहेशखाली में बचपन बहुत अजीब है। कई मामलों में, बच्चे अपने पिताओं और परिवार के सदस्यों की आजीविका कमाने में मदद करने के लिए बाल मज़दूर बन जाते हैं। इस तरह वे अपना बचपन खो बैठते हैं। किताबें उनके हाथ में आ पाएँ, उससे पहले मज़दूरी और पैसे आने लगते हैं। वे ऐसे हालात में रहते हैं जिनके बारे में शहरी समाज सोच भी नहीं सकता। उनकी ज़िंदगियाँ मछुआरों के नावों और उस द्वीप से उलझी हुई हैं जहाँ वे रहते हैं। सॉन्ग्स ऑफ़ द फिशरमेन्स चिल्ड्रेन ऐसे बच्चों की ज़िंदगियों को दिखाता है जो मोहेशखाली में रहते और काम करते हैं। यह दक्षिणी बांग्लादेश में कॉक्स बाज़ार में बसा हुआ एक द्वीप है।

म्यांमार, दक्षिणी बांग्लादेश और भारत में पाए जाने वाले एक एथनिक समूह से आने वाले राखिने परिवार में जन्मी शो ने अपना बचपन मोहेशखाली के तटीय द्वीप पर गुज़ारा। यहाँ समंदर लोगों के भविष्य के पेशे तय करता है। कुछ बच्चे बड़े होकर मछुआरे, सूदखोर, मछली कारोबारी, साल्ट गेटर्स, ठेकेदार, दलाल, मज़दूर, नाविक बनते हैं, और समंदर से जुड़े सैकड़ों धंधों में से किसी में अपना नसीब आज़माते हैं। मोंग मोंग शो एक कलाकार बन गए, उन्होंने चीन में वाटरकलर तकनीक का अध्ययन किया, और फ़िलहाल वहाँ रह कर काम करते और पढ़ाते हैं।

मुरारी झा

जन्म 1988, दरभंगा। नई दिल्ली में रहते और काम करते हैं।

रिटर्निंग टू अर्थ, अ काइंडर सर्च फ़ॉर होम, 2022-2023

कांस्य, एम-सील, ग्रेनाइट, अल्युमिनियम, लकड़ी, पानी, मिट्टी और आईना

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति

मुरारी झा एक ऐसा लैंडस्केप रचते हैं, जो देखा, महसूस किया हुआ और दिलो-दिमाग़ में उतारा हुआ है, जिसे हम सभी अपने भीतर ढोते हैं। उतना ही यह एक बुलावा है कि हम अपने आसपास के स्पेस को एक सहज बोध से भरी, प्रतीकात्मक, पारिस्थितिकीय, भाषाई और मनोवैज्ञानिक समझ के साथ देखें। कलाकार के लिए, लैंड-स्केप और वापसी का विचार एक अभिनयपरक और तलाश की कार्रवाई बन जाता है। उन्होंने यह काम उन लाखों प्रवासी मज़दूरों की हताशाभरी वापसी के बारे में सोचते हुए विकसित किया, जो भारत के पहले कोविड लॉकडाउन के दौरान अपनी ज़िंदगियों को दांव पर लगाते हुए, सारी मुश्किलें सहते हुए अपने-अपने घरों की तरफ़ लौटने लगे थे। इस तरह धरती की ओर वापसी घर के लिए एक तलाश भी है और उसे जानने की एक कोशिश भी।

झा हमसे उम्मीद करते हैं कि हम उनकी बिखरी हुई कृतियों के बीच अपने शरीरों को ले जाएँ, और उस मंज़र की अपनी यादों को ताज़ा करें जिसमें हम बड़े हो रहे थे। हम सूरज, चाँद, पहाड़ों, धरती, पेड़ों, पानी और जानवरों के साथ अपने रिश्तों की यादों को फिर से जगाएँ। वे हमें बुलावा देते हैं कि हम देखें, कहानियों को जुटाएँ, हर तत्व के साथ निजी और सामाजिक रिश्तों पर सोचें, हम उन शब्दों और मुहावरों को बटोरें जो किसी लैंडस्केप को बताने के लिए सड़कों और घरों में रोज़मर्रा इस्तेमाल होती हैं - चंदा मामा, बिल्ली मासी, समय का पहाड़ बन जाना, ज़मीन का जम जाना।

झा कई क़िस्म के माध्यमों में काम करते हैं, जिसमें परफ़ॉर्मेंस, मूर्ति शिल्प, और पेंटिंग शामिल हैं। उनका काम निजी के भीतर राजनीतिक आयामों की तलाश करता है, वस्तुओं/शरीर की अभिनयशीलता और रोज़मर्रा की घटनाओं और परिवेश के भीतर मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को सामने रखता है।

साइमन फुजीवारा

जन्म 1982, लंदन। बर्लिन में रहते और काम करते हैं।

वन्स अपॉन अ हु ?

इंस्टालेशन विद स्टॉप मोशन एनीमेशन

5 मिनट

हू इज़ शी? (बायोलॉजिकल सेक्स प्रोक्रिएशन), 2022
हू इज़ हू? (जेंडर क्वेश्चन), 2022
हू इज़ पैट्रिआर्की? (डिस्ट्रेस्ड डायग्राम), 2022

लकड़ी के पैनल पर जेस्सो, एक्रिलिक, पेंसिल, चारकोल, पेस्टल, और एसीटेट

हू इज़ फम्मा कूबिस्ट? (फ़ीमेल पैनिक!), 2022
हू'ज़ अ ब्लूमिंग फ़ूल? (आइकॉन अप्रोप्रिएशन एंक्ज़ाइटी), 2022

कैनवस पर पेस्टल और चारकोल

यह प्रस्तुति आईएफ़ए और एस्थर शिप्पर के सहयोग से साकार हुई है

हू द बे'र एक कार्टून किरदार है, जिसे कलाकार साइमन फुजीवारा ने परीकथाओं, फैंटेसी साहित्य, एनिमेशन और थीम पार्कों की दुनिया से प्रेरणा लेकर बनाया है। उसे "हू" नाम से जाना जाता है, और ऐसा लगता है कि अभी उसकी एक पूरी शख़्सियत या बोध विकसित नहीं हुआ है। उसकी कोई तयशुदा पहचान, जेंडर, और सेक्सुअलिटी नहीं है। ऐसा लगता है कि अभी हू की कोई साफ़-साफ़ डिज़ाइन भी नहीं है, बल्कि यह अभी बनती हुई एक चीज़ है, जो बनने की प्रक्रिया में ही ख़ुद को रच रही है। हू को सिर्फ़ इतना पता है कि वह एक छवि है, और वह ख़ुद को छवियों के "हूनिवर्स" से गुज़रते हुए परिभाषित करने की कोशिश करती है। हू द बे'र की दुनिया तस्वीरों का एक सपाट, ऑनलाइन इलाक़ा है, लेकिन वह बेअंत संभावनाओं से भरा हुआ है। फुजीवारा ने हू द बे'र की रचना 2020 में पहले कोविड लॉकडाउन के दौरान की जो एक "उग्र-पूंजीवादी मनोरंजन संस्कृति की लगातार तेज़ होती जा रही बेतुकी दुनिया को बच्चों जैसा, एक दादा-नुमा जवाब है"। कलाकार का कहना है, "हू असल में एक परीकथा है, आख़िर में जो यह सवाल करती है 'क्या हो अगर।।' और हमारे लिए ऐसी चीज़ों की कल्पना करने की गुंजाइश बनाती है जिनकी इस दौर में कल्पना करने या सवाल उठाने की इजाज़त हमें नहीं है।"

हू इज़ फम्मा कूबिस्ट? (फ़ीमेल पैनिक!) फुजीवारा के कामों की एक शृंखला का हिस्सा है, जिसमें उन्होंने मशहूर, और ऐतिहासिक रूप से अहम कलाकारों की प्रतिष्ठित कलाकृतियों की दोबारा रचना की है, जिसे उन्होंने अपने कार्टून किरदार हू द बे'र के नज़रिए से बनाया है। फुजीवारा का यह काम स्पेनी आधुनिकतावादी पेंटर पाब्लो पिकासो के कामों की शैली में बनाया गया है, ख़ास तौर से उनके द्वारा बनाए गए महिला मॉडलों के पोर्ट्रेट्स को आधार बनाया गया है जो क्यूबिस्ट शैली के बाद के दौर के विशिष्ट अंदाज में बनाए गए थे। हू द बे'र का चित्रण पिकासो द्वारा औरतों के पोर्ट्रेट्स की छवियों पर आधारित है, ख़ास कर उनकी लंबे समय तक साथी रहीं डोरा मार के पोर्ट्रेट पर। इस काम की शैली में जटिलता होने के बावजूद हू की ख़ासियतें बहुत साफ़-साफ़ दिखाई देती हैं, जैसे कि उसका विशिष्ट गुलाबी जीभ जिसमें से किसी न किसी रूप में एक पीला तरल पदार्थ निकलता रहता है और जो साइमन फुजीवारा द्वारा बनाए गए इस कार्टून किरदार में सब जगह दिखाई देता है। हू'ज़ अ ब्लूमिंग फ़ूल? (आइकॉन अप्रोप्रिएशन एंक्ज़ाइटी) साइमन फुजीवारा के कामों की एक शृंखला की एक और रचना है, जिसमें उन्होंने मशहूर, और ऐतिहासिक रूप से अहम कलाकारों की प्रतिष्ठित कलाकृतियों की दोबारा रचना की है, जिसे उन्होंने अपने कार्टून किरदार हू द बे'र के नज़रिए से बनाया है। कैनवस पर बनाए गए इस काम का आधार विन्सेंट वान गॉग की सनफ्लावर स्टिल लाइफ़ पेंटिंग की सीरीज़ है। सूरजमुखी के फूल पोस्ट-इम्प्रेशनिस्ट कलाकार वैन गोह के कामों में बार-बार आने वाले विषय हैं। 1888 में पेंट की एक कृति को बेहद क़रीब से अपनाते हुए फुजीवारा के काम में एक नीली पृष्ठभूमि में सूरजमुखी के फूलों के एक गुलदस्ते को गुलदान के साथ दिखाया गया है। हू द बे'र की आकृति को गुलदस्ते में देखा जा सकता है, जिसमें कार्टून का किरदार अपनी लंबी गुलाबी ज़ुबान के साथ कॉम्पोज़ीशन को घेरे हुए है और ऐसा लगता है कि यह ज़ुबान उसके सिर पर लिपटी हुई है।

वैन गोह की सूरजमुखी की पेंटिंग पश्चिमी कला इतिहास में सबसे मशहूर छवियों में से एक बन गई है। पेंटिंग कई तरह के माध्यमों में कई बार रीप्रोड्यूस हुई है, जिनमें किताबों से लेकर उपभोक्ता सामान और उपयोगी चीज़ें तक शामिल हैं। फुजीवारा हू द बे'र के बारे में बताते हुए कहते हैं कि उसकी कोई ठोस पहचान नहीं है। इसलिए हू के मौजूदा कलाकृतियों की छवियों में शामिल हो जाने को इस किरदार द्वारा अपनी पहचान की अधूरी तलाश के हिस्से के रूप में देखा जा सकता है।

हू इज़ पैट्रिआर्की? (डिस्ट्रेस्ड डायग्राम) की परिकल्पना लकड़ी के पैनल पर जेस्सो, एक्रिलिक, पेंसिल, चारकोल, पेस्टल, और एसीटेट के रूप में की गई है और यह हू को एक अमूर्त शैली में दिखाती है। ज्यामितीय लकीरें एक्सप्रेशनिज़्म या क्यूबिज़्म की शैलियों की याद भले दिलाती हैं, लेकिन वे सांख्यिकी से जुड़े ग्राफ़िक्स और चार्टों की याद भी दिलाती हैं। इस ड्रॉइंग के साथ-साथ एसीटेट पर एक प्रिंट भी शामिल किया गया है, जो समाज में पितृसत्ता के जन्म लेने और ख़ुद को बनाए रखने के चक्र को समझाने वाली एक आकृति है। हू इज़ शी? (बायोलॉजिकल सेक्स प्रोक्रिएशन) की परिकल्पना लकड़ी के पैनल पर जेस्सो, एक्रिलिक, पेंसिल, चारकोल, पेस्टल, और एसीटेट के रूप में की गई है। यह हू को एक गर्भवती औरत के रूप में दिखाती है, जिसे पेंसिल की कुछेक लकीरों के ज़रिए बनाया गया है। ड्रॉइंग के साथ में एसीटेट पर प्रिंट किया हुआ एक शारीरिक ख़ाका है, जो एक भ्रूण के विकास को दिखाता है। हू इज़ हू? (जेंडर क्वेश्चन) की परिकल्पना लकड़ी के पैनल पर जेस्सो, एक्रिलिक, चारकोल, पेस्टल, और एसीटेट के रूप में की गई है। यह हू को कुछ अमूर्त और अनगढ़ लकीरों में पेश करती है। उसके चेहरे पर हैरान रह जाने या उठने वाले सवालों के भाव हैं। इस ड्रॉइंग के साथ एसीटेट पर एक प्रिंट भी शामिल है, जिसमें विभिन्न जेंडर पहचानों और उनके बीच मिले-जुले रिश्तों का एक चार्ट दिया गया है।

वीडियो, मूर्ति शिल्प, पेंटिंग, इंस्टॉलेशन, और परफ़ॉर्मेंस में काम करते हुए फुजीवारा का काम इंसानी चाहत की एक निजी तलाश है। फुजीवारा के मुताबिक इस इंसानी चाहत के पीछे पर्यटकीय आकर्षण, ऐतिहासिक प्रतीक, मशहूर हस्तियाँ, 'एडुटेन्मेंट' (शिक्षा के साथ मनोरंजन), और नव-पूंजीवाद काम कर रहे हैं। इस लुभाने वाली लेकिन भरीपूरी दुनिया में, फुजीवारा का काम उस संस्कृति में, जिसका हम उपभोग करते हैं, फैंटेसी और प्रामाणिकता की एक साथ चलती रहने वाली तलाश के विरोधाभासों को उजागर करता है।

सुशांता मंडल

जन्म 1965, कोलकाता। नई दिल्ली में रहते और काम करते हैं।

ऑड्स एंड एंड्स ऑफ़ अ प्लेस कॉल्ड 'मेमरी', 2022-2023

घूमते हुए स्टेज पर परफ़ॉर्मेंस इन्सटॉलेशन, सर्किट, सेंसर, और मोटर।

अवधि: 6 - 8 मिनट

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति

एक्नॉलेजमेंट

मूवमेंट प्रोग्रामिंग : हिमांशु बबलानी

ऑडियो एडिटिंग : अनुपमा श्रीनिवासन

वौइस् ओवर : सर्बानी मंडल

शो शुरू करने के लिए बटन दबाएँ। अपनी सीट पर बैठ जाएँ और ऐसे काल्पनिक किरदारों से मिलने के लिए तैयार हो जाएँ जो 'मेमरी' कही जाने वाली एक जगह से आते हैं। इस शो के दल में शामिल हैं एक जादूगर, एक दर्ज़ी, एक दुकानदार, एक लड़की, एक किशोर, एक बिल्ली और कुछ अनजाने किरदार। कभी-कभी उनकी जेंडर पहचानें अस्पष्ट होती हैं। कही जा रही बातों पर ध्यान दें और आप चाहें तो अपनी कल्पना को खुला भी छोड़ सकते हैं।

यह रंगमंचीय अनुभव तीन विशिष्ट रंगों से निशान लगाए हुए मंचों/दृश्यों में चलता है, जिन्हें दो कड़ियों में तैयार किया गया है। नाट्य दल के सभी अदृश्य किरदारों को वर्णमाला के अक्षरों का नाम दिया गया है, और वे बोले हुए शब्दों के ज़रिए एक से दूसरे दृश्य में जाते हैं। कभी-कभी मुमकिन है कि किरदार बताई गई जगह पर नहीं जाएँ, और कई बार वे किसी ख़ामी (ग्लिच) के रूप में सामने आते हैं। ये किरदार मंच पर बहुत धीरे-धीरे ख़ुद को (या अपनी मौजूदगी को) दर्ज कराते हैं, जिसके लिए वे विशिष्ट ब्योरे या संवाद अदा करते हैं। स्मृति और मंच के विचार के साथ खेलते हुए, या इस बात पर गौर करते हुए कि यादें किस तरह ख़ुद को पेश करती हैं, सुसांत मंडल किरदारों का एक ऐसा दल पेश करते हैं जो देखने वालों को उनके साथ अपना रिश्ता क़ायम करने के लिए प्रेरित करता है। वे विभिन्न किरदारों को मंच पर ले आते हैं, और फ़ेड-इन और फ़ेड-आउट, काइनेटिक मेकेनिज़्म और ऑटोमेटिक सर्किट प्रोग्रामिंग के ज़रिए उनकी मौजूदगियों, उनकी गैरहाज़िरी, और उनके सुरागों, हर चीज़ को नियंत्रित करते हैं।

जादुई लालटेन और गतिशील तस्वीरों (फ़िल्म) के निर्माण की शुरुआती तकनीकी के अनगढ़पन से प्रेरित मंडल स्पॉटलाइटों और गतिशील मशीनी संरचनाओं के ज़रिए एक ऐसा इंटरेक्टिव माहौल रचते हैं कि देखने वाले उसमें सराबोर हो जाएँ। उनके काम का आधार कथात्मक और प्रदर्शनकारी तत्व हैं जो भारत की स्थानीय क़िस्सागोई की परंपरा की गूंज लिए हुए हैं।

सत्यजित रे

जन्म 1921, कलकत्ता। निधन 1992, कलकत्ता।

टू - द फ़िल्म फेबल/पैराबल ऑफ़ टू, 1964

एकेडमी अवार्ड्स फ़िल्म आर्काइव के सौजन्य से

एकेडमी फ़िल्म आर्काइव के तहत सत्यजित राय प्रिज़र्वेशन प्रोजेक्ट द्वारा रिस्टोर की हुई फिल्म

यह लघु फ़िल्म अमीर परिवार के एक बच्चे और एक बेघर बच्चे के बीच मुलाक़ात को दिखाती है। फ़िल्म में अमीर बच्चा, बेघर बच्चे को खिड़की से देखता है। फ़िल्म में संवाद नहीं हैं। इसमें बच्चों द्वारा अपने खिलौनों को दिखा-दिखा कर एक दूसरे से बड़ा महसूस करने की कोशिश दिखाई गई है। यह फ़िल्म अमेरिकी सार्वजनिक टीवी संस्थान पीबीएस द्वारा कमीशन की गई एक फ़िल्म त्रयी का हिस्सा थी। सत्यजित राय ने बंगाल की पृष्ठभूमि पर एक अंग्रेज़ी फ़िल्म बनाने के प्रस्ताव को क़बूल करने के बजाए मूक सिनेमा विधा की लीक पर चलने का फ़ैसला किया। अकेलेपन, औद्योगिकीकरण, भौतिकता, युद्ध, गैरबराबरी और सत्ता के लिए इंसानों की भूख जैसे विषयों को समेटती हुई यह फ़िल्म, राय की कई अन्य फिल्मों की तरह, वियतनाम युद्ध के एक रूपक के रूप में देखी जा सकती है। फ़िल्म बताती है कि कैसे वियतनाम के गरीब किसानों ने धौंस दिखाने वाली एक महाशक्ति अमेरिका के ख़िलाफ़ एक बहादुरी भरी लड़ाई लड़ी।

सत्यजित राय एक भारतीय बंगाली फ़िल्मकार थे जिन्हें व्यापक रूप से 20 वीं सदी के महानतम फ़िल्मकारों में से एक माना जाता है। वे एक कथा लेखक, प्रकाशक, इलस्ट्रेटर, कैलिग्राफ़र, संगीतकार, ग्राफ़िक डिज़ाइनर और फ़िल्म आलोचक भी थे, और उन्होंने कहानियों की कई किताबें और उपन्यास लिखे हैं, जो मुख्यतः बच्चों और किशोरों को ध्यान में रख कर तैयार किए गए हैं। उनकी क़िस्सागोई की शैली में भावनाएँ और मानव संवेदनाएँ प्रमुखता से रची-बसी हैं, जिनके ज़रिए वे भारत को दुनिया से नए तरीकों से और बारीकी से जोड़ते हैं।

टाओ न्युयेन फान

जन्म 1987 हो ची मिन्ह सिटी। हो ची मिन्ह सिटी में रहती और काम करती हैं।

ट्रॉपिकल सिएस्ता, 2017

साउंड समेत दो चैनल वाला एक वीडियो

कलाकार के सौजन्य से

अपने स्कूल की बेंचों पर सोते हुए छात्रों की तस्वीरें बड़ी तेज़ी से दो पर्दों पर सामने आती हैं। वे वियतनाम के देहाती इलाक़ों के बच्चे हैं। इस दृश्य के साथ-साथ एक पाठ उभरता है, जो बताता है कि कैसे कम्युनिस्ट हुकूमत ने खेती-बारी को अपनी अर्थव्यवस्था के केंद्र में रखा है। स्क्रिप्ट बताती है कि कैसे बच्चों को सिर्फ़ एक ही किताब हिस्ट्री ऑफ़ द किंगडम ऑफ़ टोनकिन (1650) उपलब्ध है जिसे एक फ़्रांसीसी जेसुइट मिशनरी अलेक्सांद्र दे रोड्स ने लिखा था। उन्होंने न सिर्फ़ वियतनामी लोगों का धर्म बदल दिया था, बल्कि वे जिस रोमन लिपि को इस देश में लेकर आए थे, उसके ज़रिए उन्होंने अपनी भाषा के साथ वियतनामी लोगों का रिश्ता भी बदल दिया था। यह काम उस अंधेरे दौर को याद करता है जब अनेक लोगों को देश से बेदख़ल कर दिया गया, या उन्हें मार दिया गया - यह एक ऐसा इतिहास है जिसे लिखा नहीं गया है, यह लोगों की एक विस्मृति है जिस को बच्चों की मासूमियत जवाब देती है।

न्युयेन एक ऐसी कलाकार हैं जो पेंटिंग, इन्सटॉलेशन, वीडियो, और परफ़ॉर्मेंस का उपयोग करती हैं ताकि ऐसी ऐतिहासिक घटनाओं, कथा परंपराओं, और नन्हे हाव-भावों को दर्शाया जा सके, जो परंपरागत विचारों और सामाजिक रिवाज़ों को चुनौती देने वाली हों। साहित्य, दर्शन, और रोज़मर्रा के ज़रिए वे सामाजिक रिवाज़ों, इतिहास और परंपरा में अस्पष्ट मुद्दों को तलाशती हैं। कलाकार अपनी 'रंगमंचीय क्षेत्र' का विस्तार कर रही हैं, जिसमें उनके ही शब्दों में परफ़ॉर्मेंस जेस्चर और मूविंग इमेजेज़ शामिल हैं। न्युयेन आर्ट लेबर नाम के कलेक्टिव की एक सदस्य भी हैं, जो कई अनुशासनों के मेल से जुड़ी कला रचनाओं में प्रयोग करता है और ऐसी कला परियोजनाओं का विकास करता है जो वियतनामी पहाड़ी इलाक़ों के ज़ाई आदिवासी समुदाय की मदद करती हों।

यासमीन जहाँ नुपुर

जन्म 1979, चिट्टगॉन्ग। ढाका में रहती और काम करती हैं।

होम, 2022-2023

भागीदारीपरक परफ़ॉर्मेंस

मुख्य कलाकार: यास्मीन जहाँ नूपुर, चन्दन कुमार और मेलोडी डोरकास

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति, जिसमें बागरी फ़ाउंडेशन का सहयोग भी हासिल हुआ

होम एक ऐसी सुरक्षित जगह है, जहाँ बचपन के बारे में और उन जगहों, लैंडस्केप, लोगों, चीज़ों और कहानियों की यादों के बारे में बातें की जा सकती हैं, जिनकी कमी गहराई से खलती है। यासमीन जहाँ नुपुर किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट आने वालों को ठहरने, आराम करने और उन सारी भावनाओं को पहचान कर क़बूल करने के लिए बुलाती हैं, जो खो गईं, लापता हो गईं। वे देखने वालों से कहती हैं कि वे दूसरे दर्शकों और अजबनियों के साथ एक रिश्ता जोड़ें, उनकी बातों और कहानियों को सुनें, उन्हें अपनी सुनाएँ।

इस बातचीत को शुरू करने की प्रेरणा के रूप में अपने ख़ुद के शरीर से आगे, कुछ निश्चित हाव-भावों और इरादों को किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के दर्शकों के पूरे सामूहिक शरीर पर विस्तार देती हैं, उन्हें एक लय में बांधती हैं। आइए, इनके वाहक बनिए, आप चाहें तो प्रदर्शनी के दूसरे कोनों तक इन्हें पहुँचाने में मदद कर सकते हैं। नुपुर को उम्मीद है कि यह धीमी रफ़्तार और पल भर के लिए आने वाले ये साझे पल, ये निर्देश और ज्ञान का बेतरतीब सफ़र हमें सामूहिक रूप से यह सिखाएगा कि हमें दूसरों से कैसे जुड़ना चाहिए। जिस तरह हम धीरे-धीरे यह सीख रहे हैं कि वैश्विक महामारी के अलगाव के बाद सार्वजनिक जगहों में कैसे जाया और रहा जाए।

जब कलाकार ख़ुद गंधों, पेड़ों, किन्ही ख़ास फलों और सड़कों, लोगों और बहुत नन्हे अहसासों की तलाश कर रही होती हैं, तब आप ख़ुद उनके साथ भी जुड़ सकते हैं। इन अहसासों को वे अपने गाँव के पारिवारिक घर में अपने बचपन के साथ जोड़ कर देखती हैं। ये ऐसी संवेदनाएँ हैं जिन्हें बड़े होने और दूर चले जाने के बाद उन्होंने खो दिया। नौ दिनों तक, यह फिर से रचा गया स्पेस उस ख़ास खाने, गेम्स, खेल, और अब खो चुके बचपन की पसंदीदा चीज़ों की सामूहिक चाहतों से, ठाकुर-मार झुलि और अनेक दूसरी निशानियों से भरा हुआ रहेगा। यह जगह हमसे सवाल करेगा कि इन सबका हमारे लिए क्या मतलब है।

नुपुर के काम में स्केच, इन्सटॉलेशन और परफ़ॉर्मेंस शामिल होते हैं। उनका काम विभिन्न नज़रियों से इंसानी रिश्तों की पड़ताल करता है, और उनमें उनके इस यकीन की छाप मिलती है कि सामाजिक स्थिति चाहे जो हो, सबको समान लोकतांत्रिक अधिकार हासिल हैं। वे दक्षिण एशिया में महिलाओं और प्रवासियों के बीच सामाजिक भेदभाव की पड़ताल करती हैं, और उम्मीद करती हैं कि वे विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले लोगों के बीच समझदारी बढ़ाने में मदद कर सकेंगी।

अशफ़िका रहमान

जन्म 1988, ढाका, बांग्लादेश में रहती और काम करती हैं।

रिबर्थ ऑफ़ वाटर्स, 2023

रिसाइकल करके हाथ से बने काग़ज़ और काग़ज़ की कठपुतलियों के साथ गतिशील इन्स्टॉलेशन

चलन बील, स्टूडियो भास्करमी और जोल पुतुल पपेट्स की साझा कोशिश

किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट और समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन की कमीशन की हुई कृति

रिबर्थ ऑफ़ वाटर्स प्रकिया पर आधारित एक ऐसी परियोजना है, जो नई खोजों और बदलावों की कोशिश करती है। इसमें बांग्लादेश और खास कर चलन बील इलाक़े की जल से भरी हुई व्यापक धरती के दो बेहद ज़रूरी पर्यावरणीय मुद्दों को उठाती है। ये मुद्दे हैं: कचड़े से भूमिगत जल का प्रदूषण और गाँव के बच्चों के लिए शैक्षणिक मौक़ों की कमी। परियोजना का मुख्य उद्देश्य गाँव के बच्चों को प्रदूषित जलाशयों की सफ़ाई के काम में सक्रिय रूप से जोड़ते हुए उन्हें सशक्त बनाना है और जुटाए हुए कचड़े को रिसाइकल करके हाथ से काग़ज़ तैयार करना है। इस पहलक़दमी के ज़रिए, हमारा मक़सद पर्यावरण को बचाने के लिए एक संजीदा नज़रिए को विकसित करने की कोशिश करना है, और साथ ही बच्चों को मूल्यवान शिक्षा देना और उनमें कौशलों के विकास के मौक़े पैदा करना है।

इससे बढ़कर, यह परियोजना रिसाइकल करके हाथ से बने काग़ज़ को एक माध्यम के रूप में उपयोग करते हुए बांग्लादेश में भूतों से जुड़ी स्थानीय वाचिक कहानियों की मंत्रमुग्ध कर देने वाली दुनिया की पड़ताल भी करती है। इसे “पेपर भूतेर गोल्पो” (काग़ज़ी भूतों की कहानी) का नाम सही ही दिया गया है। लोकगाथाओं से निकली और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनाई जाती रही ये मनमोहक कहानियाँ एक अहम जगह रखती हैं। विज़ुअल आर्ट और क़िस्सागोई के एक सशक्त मेल से बनी काग़ज़ की ये कठपुतलियाँ बांग्लादेशी भूत कथाओं की रहस्यमय, डरावनी और रोमांचक प्रकृति पर रोशनी डालती हैं।

रिबर्थ ऑफ़ वाटर्स कई धागों को एक साथ जोड़ती है: भूतों की अविस्मरणीय रूप से सुंदर लोककथाएँ, भूमिगत जल में कचड़े से होने वाले प्रदूषण के बेहद ज़रूरी मुद्दे को उठाने के लिए एक मुकम्मल और आगे बढ़ कर राह दिखाने वाला नज़रिया, और एख ऐसी हालत में चलन बील के बच्चों के लिए पढ़ने-लिखने के मौक़े मुहैया कराना, जब वे बाढ़ के चलते चार महीनों तक दुनिया से कट जाते हैं।

यहाँ दिखाई गई काग़ज़ की तीन कठपुतलियाँ हैं – शकचुन्नी, मेछो भूत और मम्दो भूत। शकचुन्नी शब्द संस्कृत के “शंखचूर्णी” से बना है। आम तौर पर यह एक शादी-शुदा औरत का भूत होता है जो शंख से बनी एक ख़ास किस्म की परंपरागत चूड़ियाँ पहनता है। बंगाल में ये चूड़ियाँ हिंदू औरतों के शादीशुदा होने का प्रतीक हैं। बांग्लादेश और भारत में शकचुन्नियाँ प्रेतनियों से अलग होती हैं, और माना जाता है कि वे पेड़ों पर रहती हैं और उन लोगों पर हमला करती हैं जो उन्हें तंग करते हैं। माना जाता है कि उन्हें हराया नहीं जा सकता है और उनसे छुटकारा पाने का अकेला रास्ता यही है कि किसी इमाम या पंडित को बुलाया जाए जो उन्हें भगाने के लिए कई क़िस्म की झाड़-फूँक अंजाम देते हैं।

मेछो भूत एक ऐसा भूत है जिसे मछली खाना पसंद है। मेछो शब्द बांग्ला के माछ यानी मछली से बना है। मेछो भूत गाँव के तालाब या झीलों के आस-पास रहता है, जहाँ भरपूर मछलियाँ होती हैं। इस किस्म के भूत देर रात आने वाले मछुआरों या मछली ले जा रहे किसी अकेले इंसान से गुज़ारिश करता है कि वो भूत को अपनी मछली दे दे। वह नाक से बोली निकालते हुए कहा है – “माछ दिये जा” (मछली देते जाओ)। अगर वह इंसान मेछो भूत को मछली देने से मना कर देता है, तब भूत उसका नुक़सान करने की धमकी देता है। कभी-कभी वे गाँव में घरों की रसोई से या मछुआरों की नाव से मछली चुरा लेते हैं।

मम्दो भूतों के बारे में माना जाता है कि वे मुसलमानों के भूत हैं। आम तौर पर वे झाड़ीनुमा पेड़ों में रहते हैं और आने-जाने वाले लोगों को कई तरीक़ों से तंग करने की कोशिश करते हैं। माना जाता है कि इस क़िस्म के भूत लोगों की गरदन मरोड़ कर या उन पर सवार होकर उन्हें डराते हैं। बांग्लादेश में उन्हें भूतों का सरताज माना जाता है।

अशफ़िका रहमान एक बांग्लादेशी विज़ुअल कलाकार, टीचर और कला के ज़रिए पहलक़दमी करने वाली कलाकर्मी हैं जो अपने काम के ज़रिए अपने वतन के संस्थागत सामाजिक मुद्दों की पड़ताल करती हैं। उनका काम कला भी है और डॉक्यूमेंटरी भी। अपने हरेक काम में, वे जटिल संस्थागत सामाजिक मुद्दों पर मुख्यधारा के नज़रिए को चुनौती देने की कोशिश करती हैं। ख़ास कर बांग्लादेश के हाशिए पर अल्पसंख्यक समुदायों के साथ होने वाले ग़ैरबराबर व्यवहार के मुद्दे जैसे मानवता के प्रति चिंताजनक ख़तरों के बारे में वे वैश्विक रूप से जागरुकता पैदा करने की कोशिश करती हैं।

नेहा चोकसी

जन्म 1973, बेलेविल; लोस एंजेलेस और मुंबई में रहती और काम करती हैं।

लीफ़ फ़ॉल, 2007-08

एचडीवी, कलर, साउंड, सबटाइटल्स

अवधि: 14 मिनट 15 सेकंड

संग्रह: किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट

नेहा चोकसी की एक फ़िल्म

अभिनय:

समर कात्यान, आशीष पाण्डेय, विनय चौहान, मधु यादव, सुरेश यादव, और ननोली गाँव के बच्चे

कैमरा:

नेहा चोकसी और प्रसन्न जैन

संपादन और साउंड डिज़ाइन:

अरिंदम घटक

ननोली स्टूड फार्म का शुक्रिया

शुरू-शुरू में विशालकाय पेड़ के चारों तरफ़ बना हुआ अस्थायी ढाँचा किसी पैमाने की तरह, या बचाव के लिए लगाए गए किसी ढाँचे की तरह महसूस होता है। लेकिन धीरे-धीरे, सुबह से लेकर शाम तक, पेड़ का पहनावा उतार दिया जाता है, उसको टॉर्चर किया जाता है, अधमरा कर दिया जाता है, अंत में पेड़ सिर्फ़ एक शाखा में ही बचा रह जाता है। इस विस्तृत परफ़ॉर्मेंस की प्रस्तुति में, देखने वाले लोग ग़ैरमौजूदगी की भाषा तलाशने की जद्दोजहद का हिस्सा हैं। क्योंकि चोकसी इस प्रक्रिया में उभरने वाली “इमॉटिव फोर्स” (भावनात्मक ताक़त) को अपनी कला के लिए एक सामग्री के रूप में इस्तेमाल करती हैं।

लीफ़ फ़ॉल में एक दल को एक ग्रामीण पीपल के पेड़ को दिन भर में नंगा करते हुए दिखाया गया है, जिसमें अंत में बिना पत्तों के बस एक टहनी बची रह जाती है। बची हुई पत्ती ख़ास बन जाती है, क्योंकि यह दिन भर पेड़ के हिस्सों के हटाने अथक प्रक्रिया के बाद बची रह गई है। चीज़ों के वजूद को मिटाने (अनुपस्थित करने) और हटाने की यह प्रक्रिया लीफ़ फ़ॉल की गहन भावनात्मक ताक़त है। लीफ़ फ़ॉल में नेहा चोकसी की दिलचस्पी उस आख़िरी बची हुई अकेली पत्ती तक पहुँचने में थी, उसके अकेले अनोखेपन को समझने में थी, और ऐसा करने का एक ही तरीका था कि दूसरी पत्तियों की मौजूदगी को दूर कर दिया जाए। फ़िल्म में बोले गए शब्द फ़िल्म के दल, अभिनेताओं और दोस्तों के साथ की गई बातचीत के 40 पन्नों में ट्रांस्किप्शन का एक काव्यात्मक संक्षिप्त रूप हैं। लीफ़ फ़ॉल फ़िल्मों की एक त्रयी (ट्रिलजी) का हिस्सा है, जिसे चोकसी ने सात वर्षों में बनाया है। प्रदर्शन आधारित दो अन्य फ़िल्में हैं पेटिंग ज़ू/माइंड्स टू लूज़, और आइस-बोट। दोनों काम भी मौजूदगी को बेदख़ल करने के बारे में हैं।

परफ़ॉर्मेंस, वीडियो, इन्स्टॉलेशन, मूर्ति कला, और दूसरे फ़ॉर्मेटों में काम करते हुए नेहा चोकसी तर्क को झकझोरती हैं जिसके लिए वे सभी चीज़ों के जीवन में काव्यात्मक और अमूर्त हस्तक्षेपों की मदद लेती हैं – पत्थर से लेकर पेड़ तक, पशुओं से लेकर ख़ुद तक, दोस्तों से लेकर संस्थानों तक। विभिन्न अनुशासनों के बीच मेल के ज़रिए वे अपनी बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों की धाराओं के ज़रिए समय, चेतना और समाजीकरण के आपसी ताने-बाने की पड़ताल करती हैं।

आर्टरीच इंडिया

(स्थापना 2015, नई दिल्ली)

लीफ़ फ़ॉल, 2007-08

एचडीवी, कलर, साउंड, सबटाइटल्स

अवधि: 14 मिनट 15 सेकंड

संग्रह: किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट

नेहा चोकसी की एक फ़िल्म

अभिनय:

समर कात्यान, आशीष पाण्डेय, विनय चौहान, मधु यादव, सुरेश यादव, और ननोली गाँव के बच्चे

कैमरा:

नेहा चोकसी और प्रसन्न जैन

संपादन और साउंड डिज़ाइन:

अरिंदम घटक

ननोली स्टूड फार्म का शुक्रिया

हमारी दुनिया नई दिल्ली एनसीआर में स्थित बच्चों की देखभाल के लिए बने बाल गृहों के बच्चों द्वारा बनाई गई कृतियों को पेश करती है। ये बच्चे 2020-23 के बीच टीचिंग फ़ेलोशिप प्रोग्राम्स का हिस्सा थे। इनमें रेनबो होम्स, उदयन केअर, सलाम बालक ट्रस्ट, तारा होम्स और कर्म मार्ग शामिल हैं।

आर्टरीच इंडिया और केएनएमए द्वारा स्थापित टीचिंग फ़ेलोशिप्स के ज़रिए कला सिखाने वाले कलाकारों ने केअर में रहने वाले बच्चों के लिए गहन कार्यशालाएँ आयोजित कीं। छात्रों के साथ मिल कर उन्होंने भरोसे और उल्लास के लिए एक जगह बनाई, जिसमें उन्होंने ऐसे गेम्स का इस्तेमाल किया जो आपस में झिझक को दूर करते थे और तनाव से राहत देते थे। 'सीखने की साझी' जगह के भीतर बच्चों ने ऐसी सामग्री के साथ प्रयोग किए जो उन्हें आसानी से उपलब्ध थी – अख़बार, गत्ते, गीली मिट्टी से पेंटिंग, पेपर माशे – और इस तरह उन्होंने कला रचने की व्यापक दुनिया में पहली छलांगें लगाईं। इसी के साथ उन्होंने लगातार सवाल किए, उन्हें अपनाया।

अपने केअर होम्स में होने वाली कार्य-शालाओं में, अनेक छोटी दुनियाएँ उभरीं, जिनमें उनके अपने जादुई किरदार थे, अनगिनत आयाम थे, और बच्चों की मस्ती में डूबी हुई कहानियाँ थीं। वेरी स्मॉल फ़ीलिंग्स के इस सेक्शन में हम कला निर्माण और चिंतन की प्रक्रिया और उसकी कल्पनात्मक जीवंतता से रू ब रू हो रहे हैं। यहाँ पेश किए गए काम अदिति अग्रवाल, अक्षय सेठी, गोपा रॉय, गौतम पाल, ज्योतिदास केवी, तहसीन अख़्तर, शोइलि कानूनगो और तिलोत्तमा बी जैसे कलाका-रों-शिक्षकों के नेतृत्व में चली फ़ेलोशिप से चुने गए हैं।

नन्हे कलाकार:

मोतिबुर, चंचल, शिवा, शिवम, कुंदन, सूरज, राम, सुमित, आशु, राकेश, इरशाद, एरशाद, ललिता, आरती 1, रीना, मीना, आस्मा, प्रियंका, जिमादी, कुलसूम, हिना, शबीना, शाहीन, आरती 2, अंकिता, शिवम, अलका, लाली, शमा, आशिफ़, सुभाष, कोमल, राहुल, काजल, सिमरन, नूरजहाँ, कमलजीत, श्रवण, मनोज, राज, विशाल, वंशिका, नूरी, सिकंदर, श्यामू, राशिद, लोकेश, नंदिनी, सचिन, समीर, पीयूष, रोशनी, ज्योति, निर्मला, शिवानी, लाखी, ख़ुशी, कृष्णा, दीप, निहाल, हर्षित, राज, किशन, शिवम, शादमा, चंदा, सिमरन, निशा 1, रवीना, पिहू, निशा 2, संजना, चाँदनी, प्रियंका, समीक्षा, लक्ष्मी, नैन्सी, एकता, तान्या, दीपक, अंश, राजा, रजत, भोला, राजेश, गगन, अंगद, साहिल, मेहरुद्दीन, समीर, अजय, विशाल और पंकज।

फ़ोटो बूथ राजेश, भोला, अजय, रजत, प्रियंका, निशा, तान्या 1, तान्या 2 और पिहू द्वारा पेंट किया गया।

अंगा आर्ट कलेक्टिव

जन्म 1988, ढाका, बांग्लादेश में रहती और काम करती हैं।

खाल गाँव, 2022-2023

बाँस, चिकनी मिट्टी, मिट्टी, और जूट के साथ-साथ ऑडियो विज़ुअल इन्स्टॉलेशन

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा मिल कर कमीशन की हुई कलाकृति। इसे इनलैक्स शिवदासानी फ़ाउंडेशन से अतिरिक्त समर्थन मिला है।

योगदान: जगल कुमार, अनूप लेत, देवदीप गुप्ता, ज्ञानवंत यादव और उमेश सिंह

विभिन्न क़िस्म की सामग्री का एक ढेर, इंटरेक्टिव वाहन, बीज, किताबें और खेलने की अंतरंग जगह अंगा आर्ट कलेक्टिव के इंस्टॉलेशन खाल गाँव के नए संस्करण में आपका स्वागत करती हैं। प्रदर्शनी के ढाका संस्करण में पहली बार पेश किए जाने के बाद इसको और भी विकसित किया गया है। वे सोताल से प्रेरित हैं, जिसका असमिया भाषा में अर्थ होता है कई दाख़िलों वाली एक खुली जगह। दृश्य और संवेदी कहानियों के बीच गहन आपसी सूत्र रचते हुए उन्होंने खाल गाँव को एक प्रयोगशाला की तरह सोचा है जहाँ कलेक्टिव के सद-स्यों के अपने-अपने काम, अवलोकन और सोच एक दूसरे के साथ संवाद करते हैं। अपने कलेक्टिव नो (kNOw) स्कूल की इस विकसित होती भाषा के साथ, वे देखने वालों के जानने के देशज तरीकों के साथ जुड़ने के लिए बुलाते हैं, और खाल गाँव के नक्शों को और व्यापक बनाते हैं।

यह परियोजना दो असमिया शब्दों से निकली है: खाल, जिसका मतलब होता है निचली ज़मीन, या गाँव में या उसके आस-पास कोई पोखर। और दूसरा शब्द है: गाँव। 1970 के दशक से, ऊपरी असम के रहमारिया क्षेत्र में (जो अब भारत में स्थित है) लगातार आने वाली बाढ़ और नदी के कटाव के नतीजे में पोखर-तालाब, उपजाऊ खेत, दलदली ज़मीन, हरियाली और 35 गाँवों का एक समूह धीरे-धीरे मिट गया है, जिससे गाँववालों को विस्था-पित होकर दूर-दराज के गाँवों में बसना पड़ा। ब्रह्मपुत्र नदी के अंतहीन प्रवाह में डूबे हुए खाल गाँव भौतिक भूगोल से मिट गए, वे अब सिर्फ़ उन गाँवों से लोगों और उनके वंशजों के ज़बानी इतिहास में ही बसते हैं। सामु-दायिक भोजों में, जीवंतता और देहाती ऊर्जा से भरपूर मछली मारने के त्यो-हारों में, और साथ-साथ संगीत और प्रदर्शन की जगहों पर याद किए जाने वाले खाल गाँवों का वजूद अब सिर्फ़ पुरानी पीढ़ी की कहानियों में ही हैं, जो किशोर उम्र में उन जगहों पर कभी रह चुके थे। प्रदर्शनी में वे एक ऐसी जगह के रूप में उभरते हैं, जिन्हें उनके वि-स्थापित बाशिंदों की सामूहिक यादों से जीवंत बनाया गया हो।

अंगा आर्ट कलेक्टिव के सदस्यों ने इस अदृश्य गाँव और उनके बाशिंदों के बचपन की यादों को एक लेंस के रूप में लिया है, जिसके ज़रिए वे पारिस्थि-तिकी और राजनीतिक तौर पर उथल-पुथल भरे हालात में एक छीजती जा रही धरती पर इस बात पर फिर से सोचने की कोशिश कर रहे हैं कि ऐसे में एक बच्चे की छवि क्या मायने रखती है। इस अदृश्य गाँव की जगह के आसपास के अपने दौरों से और बुजुर्गों के साथ बातचीत के ज़रिए वे एक ऐसी जगह का खाका खींच पाए हैं, जो सराबोर कर देती है, जहाँ लेन-देन की प्रथा क़ायम है, चीज़ों, वास्तुशिल्प, और प्रदर्शनों के साथ एक शोख़ अंदाज जुड़ा हुआ है। बाढ़ से असुरक्षित इस इलाक़े में जलवायु के नतीजे में पलायन और मौसमी विस्थापन आम है, और इसने काम-धंधों, जगह, कहानियों, और समुदाय की यादों को बदल कर रख दिया है। यह इन्स्टॉलेशन एक विस्था-पित समुदाय की सामूहिक मानसिक-ता की पड़ताल करती है, और उम्र और पारिस्थितिकी, कलात्मक भाषा और स्मृति, शोख़ी और बुजुर्गियत के बीच रिश्तों की एक खोज करती है।

2010 में कुछ दोस्तों के एक समूह द्वारा शुरू किए गए अंगा आर्ट कलेक्टिव ने एक ऐसा नज़रिया विकसित किया है, ताकि कला के जरिए पूर्वोत्तर भारत में असम के समकालीन और जटिल इतिहास के साथ एक रिश्ता क़ायम किया जा सके। मौजूदा 13 सदस्यों के साथ, अंगा कला रचना के लिए एक रचनात्मक और सहकार पर आधारित जगह को प्रोत्साहित करता है, जिसका विकास दूसरे कलाकारों, गाँव के समुदायों, पारिस्थितिकी विशेषज्ञों, अकादमिकों, और एक्टिविस्टों के साथ ज्ञान को बाँटने के ज़रिए हुआ है। नो स्कूल और द ग्रेनरी ऐसी दो पहल-क़दमियाँ हैं जो साइट-स्पेसिफ़िक हैं और समुदाय के ज़रिए सीखने-सिखाने और नई समझ और नज़रिए को विकसित करने की कोशिश करती हैं। अंगा के लिए, एक कलेक्टिव एक बंद समूह नहीं बल्कि एक फलती-फूलती रहने वाली प्रक्रिया है।

संजोय चक्रबर्ती

जन्म 1984, चिट्टगॉन्ग। ढाका में रहते और काम करते हैं।

शेड्स ऑफ़ फ़्लावर्स, 2022-2023

बांग्लादेश में 1950-70 के दशकों में बच्चों की संस्कृति पर आधारित एक आर्काइवल और भागीदारीपरक स्पेस

आर्काइवल प्रिंट्स, कैनवस, टूल्स

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति

संजोय चक्रबर्ती एक भागीदारीपरक स्पेस तैयार करते हैं जो इतिहास और यादों के बीच क़ायम है। यह बांग्लादेश की मुक्ति के पहले के पूर्वी पाकिस्तान के मुख्य अख़बारों में बच्चों के पन्नों की ऐतिहासिक बनावट पर उनके शोध पर आधारित है। ये पन्ने अपने समय के सामाजिक और राजनीतिक हालात के साथ रिश्तों को उजागर करते हैं।

कलाकारों, लेखकों और बुद्धिजीवियों द्वारा शुरू किए गए बच्चों के ये पन्ने - मुकुल महफ़िल (डेली आज़ाद), खेलाघोर (डेली संगबाद), और कोचि काचार मेला (डेली इत्तेफ़ाक़) - कई दशकों के दौरान बदल कर संगठनों में तब्दील हो गए, जिनमें से हरेक के पास बच्चों के लिए विभिन्न गतिविधियों का अपना फ़ोकस हुआ करता था।

बँटवारे के बाद पूर्वी बंगाल में शुरू होने वाला पहला दैनिक आज़ाद था, जिसमें बच्चों के लिए 'मुकुलेर महफ़िल' नाम से एक साप्ताहिक प्रकाशित होता था। पाकिस्तान में रहते हुए देश में पचास और साठ के दशकों में बच्चों के लिए दो और साप्ताहिक अख़बार प्रकाशित होते थे - कोचि काचार मेला (डेली इत्तेफ़ाक़) और खेलाघोर (डेली संगबाद)। ये दोनों अख़बार अभी भी प्रकाशित होते हैं, लेकिन बच्चों के लिए उनके साप्ताहिक पन्ने अब नहीं आते हैं। ये तीनों अख़बार अलग-अलग विचारधाराओं के तहत काम करते थे – पाकिस्तानी राष्ट्रवाद, बंगाली राष्ट्रवाद और वामपंथी विचारधारा पर, जिनकी झलक सीधे-सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के पन्नों में भी मिलती है। बच्चों के इन बांग्लादेशी अख़बारों की कतरनों को यहाँ शेड्स ऑफ़ फ़्लावर्स में पेश किया गया है। ये अख़बार अब बुज़ुर्ग हो चुके लोगों की बचपन की यादों से बहुत क़रीबी से जुड़े हुए हैं, जो पचास, साठ और सत्तर के दशक के बांग्लादेश में बड़े हो रहे थे।

कलाकृति का निचला लाल हिस्सा ख़ाली छोड़ दिया गया है ताकि बच्चे उन पर ड्रॉइंग, स्केच और पेंटिंग बनाएँ। जबकि एक तरफ़ पुरानी पीढ़ी के लोग यहाँ आकर अपनी यादों को ताज़ा करते हैं, बच्चे यादें रचते हैं। और इस याद के साथ, कई पीढ़ियों के बीच में एक रिश्ता कायम होता है। और यहाँ का लाल रंग यादों का रंग बन जाता है। क्योंकि लाल रंग की ही तरह यादों को भी दूर से देखा जा सकता है।

बच्चों से जुड़े इस ताक़तवर सांस्कृतिक काम को धीरे-धीरे रोज़मर्रा का हिस्सा बनाने की यह प्रक्रिया एक ऐसे रिश्ते पर रोशनी डालती है, जिस पर बहुत कम चर्चा और शोध हुआ है। वो यह है कि आधुनिकता, नए राष्ट्र-राज्य, और सांस्कृतिक नागरिकों के रूप में नन्हे बच्चों के बीच क्या रिश्ता है, और कलाकार और रचनात्मक कामों में लगे हुए लोगों ने इस रिश्ते को किस तरह गढ़ा। अपने फ़ील्डवर्क, शोध, और इन संगठनों का नेतृत्व करने वाले कलाकारों से बातचीत के आधार पर चक्रबर्ती का यह काम बच्चों के लिए सांस्कृतिक आंदोलन के ऐतिहासिक विकास की एक झलक देता है। साथ ही अनेक प्रतिष्ठित आधुनिकतावादी पेंटरों, लेखकों, और सांस्कृतिक शख़्सियतों के नियमित योगदान को भी दिखाता है, जिन्होंने उनके लिए सामग्री और उसकी अवधारणा तैयार की थी।

एक कला इतिहासकार के रूप में चक्रबर्ती की गहरी दिलचस्पी बांग्लादेश के इतिहास में कला और इसकी गहरी जड़ों वाली संस्कृति से जुड़ी नई कहानियों को तलाशने में है। वे एक ऐसे कलाकार भी हैं जो अपने शोध से निकली ड्रॉइंग, इंस्टॉलेशन और पर-फ़ॉर्मेंस के साथ प्रयोग करते हैं।

रुपाली गुप्ते और प्रसाद शेट्टी

रुपाली गुप्ते जन्म 1974, मुंबई। मुंबई में रहती और काम करती हैं।
प्रसाद शेट्टी, जन्म 1975, मुंबई। मुंबई में रहते और काम करते हैं।

बेली ऑफ़ द स्ट्रेंज III, 2023

बाँस और लकड़ी के ढाँचे जिनमें दाख़िल हुआ जा सकता है

समदानी आर्ट फ़ाउंडेशन और किरण नाडर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट द्वारा कमीशन की गई कृति

क्षमता: एक समय में 6-7 व्यक्ति

भीतर जाने से पहले कृपया अपने जूते निकाल दें

द बेली ऑफ़ द स्ट्रेंज बच्चों के लिए और आपके भीतर के बच्चे के लिए एक परस्पर लेनदेन की वस्तु/जगह है। अपने भीतर इसमें विभिन्न जगहों की अजीबोगरीब किताबें हैं, ये जगहें वास्तविक भी हैं और काल्पनिक भी। यह आपको अपनी कल्पना में नई कहानियों को जोड़ने के लिए अपनी तरफ़ बुलाती है। भीतर पहुँचने के लिए मंचनुमा सीढ़ियों के साथ बेली की व्यापक जगह एक दूसरी ही दुनिया का एक काव्यात्मक बुलावा है, यह बहुत नन्हे अहसासों की ओर एक बुलावा है। यह एक ऐसी जगह बन जाती है जहाँ जागते हुए सपने देखे जा सकते हैं, कई क़िस्म की गतिविधियों के लिए प्रदर्शन की एक जगह, अजीबोगरीब अहसासों, अजीब रूपों और विचारों के साथ संवाद और रिश्ते क़ायम करने की जगह।

रक़्स मीडिया कलेक्टिव के क्यूरेशन में एमएसीबीए, बार्सिलोना में हुई एक प्रदर्शनी में बेली ऑफ़ द स्ट्रेंज के पहले संस्करण में यह खोखल एक अजीब गोले के रूप में पेश किया गया, जो इस यूरोपीय गैलरी की अति-आधुनिक पुरुषत्व से भरपूर दिखने वाली जगह को एक नर्माहट देती थी। ढाका आर्ट समिट 2023 में वेरी स्मॉल फ़ीलिंग्स प्रदर्शनी में इसके दूसरे संस्करण का ढाँचा बाँस से और दीवारें और सजावट पेपर माशे से बनाई गई थीं। इसने समिट की उत्सवी उर्जाओं के सामने अपने नारीत्व वाले स्वरूप और एक गर्भनुमा स्पेस को पेश करते हुए सबको अपने भीतर निमंत्रित किया। अब, केएनएमए में अपने तीसरे संस्करण में, बेली ने एक विशालकाय खिलौने का रूप अपनाया है, जो एक सँकरी जगह में बेढंगे तरीके से क़ायम की गई दिखती है, और इस तरह चीज़ों के वास्तविक आकार/पैमाने को लेकर एक भ्रम पैदा करती है। पता नहीं लग पाता कि यह एक बड़ी-सी चीज़ है कि सिकुड़ती हुई जगह। इसकी व्हेलनुमा अंदरूनी जगह आपको इसकी गर्माहट और दमक में बैठने के लिए निमंत्रित करती है, कि आएँ और कहानियाँ कहें और सुनें और दूर और पास की दुनियाओं की कल्पना करें। ऐसा करते हुए यह काम उस बेमेलपन की बात उठाता है जो शहरों में लेन-देन की चीज़ों (ट्रांज़ैक्शनल ऑब्जेक्ट्स)/जगहों से जुड़ा हुआ होता है। यह बेमेलपन अक्सर पूंजी की परंपरागत कहानियों को परे करते हुए अजीब दोस्ताना मुठभेड़ों का तर्क रचता है।

देखने आने वालों को यह बेली अपने भीतर आने, ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने और इस इन्स्टॉलेशन की चौड़े छेदों से अपनी आवाज़ों को बाहर फेंकने के लिए निमंत्रित करती है। वेरी स्मॉल फ़ीलिंग्स प्रदर्शनी के भीतर विभिन्न परियोजनाओं और संदर्भों को बेली के भीतर जगह मिली है। जैसे कि भारतीय भाषाओं में अनुवाद करके छपी सोवियत किताबों पर अफ़रा शफीक़ का शोध और इंटरेक्टिव गेम से जुड़ी किताबें, ब्लेज़ जोसेफ़ और अत्रेयी डे के निर्देशन वाली कार्यशालाओं से उभरी आदिवासी भाषाओं की किताबें, अमिताभ घोष का जंगलनामा, अनपु वर्की का समर्स चिल्ड्रेन वगैरह शामिल हैं।

कमीशन की हुई यह विशाल कलाकृति 'लेन-देन की चीज़ों' (ट्रांज़ैक्शनल ऑब्जेक्ट्स) पर रुपाली गुप्ते और प्रसाद शेट्टी के कामों पर आधारित है, जो इस बात के बारे में है कि जब शहर बसते हैं तो लेन-देन की इन चीज़ों के ज़रिए अनगिनत तरकीबें और तरीक़े जन्म लेते हैं। दुकानों का विस्तार, फेरीवालों के खोमचे, ढोए जा सकने वाले औज़ार, आराम करने का साज़-सामान, चारदीवारियों पर लगाई गई खूँटियाँ जो उनका इस्तेमाल करने में मदद करती हैं, स्पेस पर दख़ल करने के लिए इस्तेमाल में आने वाली चीज़ें, घूमने वालों के लिए लावारिस छोड़ा गया फ़र्नीचर, आदि सभी लेन-देन की चीज़ें हैं।

गुप्ता और शेट्टी का प्रशिक्षण वास्तुकला और शहरी विषयों में है। वे मिल कर बार्ड स्टूडियो चलाते हैं, जो वास्तुकला, कला, और शहरी अध्ययन के बीच आवाजाही करने वाली और कई अनुशासनों वाली एक जगह है। वे मुंबई में स्कूल ऑफ़ एनवायरमेंट एंड आर्किटेक्चर के संस्थापक सदस्य हैं। उनका शोध और काम प्रयोगशील शिक्षा विज्ञान, शहरी रूपों के विभिन्न पहलुओं की तलाश और ऐसे परिवेशों और वस्तुओं के निर्माण से जुड़ता है, जो रोज़मर्रा के व्यावहारिक शहरी रूपों से प्रेरित हैं।

निधि खुराना

जन्म 1980, इलाहाबाद। नई दिल्ली में रहती और काम करती हैं

प्लेरूम, 2023

एड्यांचावाडी में उडवी स्कूल के छात्रों के साथ किताब बनाना और दूसरे प्रयोग। यह स्कूल तमिलनाडु के ऑरोविल में एक गाँव में स्थित है।

कलाकार वेरी स्मॉल फ़ीलिंग्स प्रदर्शनी में 2 जुलाई से 31 अगस्त तक एक खुले क्यू-बिकल में अपनी डेस्क के साथ मौजूद हैं, और देवी प्रसाद की किताब और सेवाग्राम में नई तालीम कला शिक्षा योजना के साथ एक संवाद क़ायम कर रही हैं।

निधि खुराना के लिए प्लेरूम स्कूल से जुड़ी ढेर सारी यादों से निकला है। वे वेल्हैम गर्ल्स स्कूल, देहरादून की छात्रा रह चुकी हैं, जहाँ एक अनोखी इमारत के रूप में एक आर्ट रूम हुआ करता था। यह तीन दरवाज़ों वाली अंग्रेज़ी के L आकार वाली संरचना थी, जिसमें एक कोने में एक मंच था जहाँ L की दोनों लाइनें मिलती हैं। उसमें हवा आने के लिए ढेर सारी खिड़कियाँ थीं। यह एक अनोखी जगह थी जो किसी भी स्थिति के काम आ सकती थी। यह ज़रूरत का कमरा था, जो बारिश वाले दिनों में असेंबली हॉल बन जाता था, या लंच के बाद जहाँ डांस क्लासेज़ लगती थीं, जो रिहर्सल का कमरा हुआ करता था, जहाँ वाद-विवाद आयोजित होते थे, और जो ऐसे ही अनेक आयोजनों की जगह था। यह “खेल” को समर्पित एक कमरा था।

खुराना ने जब म्यूज़ियम के भीतर अपनी डेस्क पर दो महीने बिताने का फ़ैसला किया है तो यह खेलघर (प्ले-रूम) एक कलाकार और एक शिक्षक के रूप में उनके सफ़र को जानने का एक ज़रिया भी है। उनकी योजना किताबें तैयार करना है। साथ ही, उसी स्कूल में एक छात्र और फिर एक शिक्षक के रूप में अपनी ख़ुद की शिक्षा पर, और आज की दुनिया में एक शिक्षादाता और एक कलाकार के रूप में अपनी भूमिका पर ग़ौर करना है। इस पड़ताल के केंद्र में उन्होंने देवी प्रसाद की किताब को रखा है। आर्ट: द बेसिस ऑफ़ एडुकेशन में देवी प्रसाद का नज़रिया कला, बच्चों, बाल कला, इंसानी व्यवहार, मनोविज्ञान और एक व्यक्ति के जीवन में कला की भूमिका पर उनके बरसों के अध्ययन पर आधारित है। इसमें उन्हों-ने बच्चों के रेखांकनों और लिखावटों के अध्ययन और व्याख्या में अपनी संजीदा दिलचस्पी को भी जोड़ा है। उन्होंने बच्चों को अपनी ख़ुद की किताब बनाने के लिए मौक़े तैयार किए हैं, और वे फ़ौरन उनके सवालों के जवाब देने की कोशिश करती हैं। इसे हम देवी प्रसाद के ख़ुद अपने लेखन और किताबों से समझते हैं, जो खुराना के प्लेरूम में भी देखने के लिए रखी गई हैं। साथ ही यहाँ सेवाग्राम की नई तालीम (1944-58) के बच्चों द्वारा बनाई गई कला को भी पेश किया जा रहा है, जिसे वेरी स्मॉल फ़ी-लिंग्स ने देवी प्रसाद के परिवार से लोन के रूप में हासिल किया है।

प्लेरूम की एक दीवार एक दूसरे काम से बनी है, जो एक साइट-स्पेसिफ़िक इन्स्टॉलेशन है। इसमें एक किताब के विचार से प्रेरित अनेक फ्रेम हैं, और देखने की प्रक्रिया में भागीदारी और संवाद के लिए बुलाते हैं। यह एक किताब है, और खुराना के लिए हरेक किताब एक प्रवेश द्वार है, जिससे होकर विचार दूसरों तक पहुँचते हैं या जो विचारों को दूसरों के लिए सहेज कर रखने का काम करती है, ताकि वे लेखक से पाठक तक पहुँच सकें और हर पाठक उनकी अपनी व्याख्या कर सके। इन्स्टॉलेशन में इस्तेमाल में लाई गई तस्वीरें तमिलनाडु के ऑरोविल के एक गाँव एड्यांचावाड़ी में उडवी स्कूल के बच्चों के साथ बनाई गई थीं। 2013 में जून से अगस्त के बीच तीन महीनों के लिए रुचिन सोनी और निधि खुराना को आर्ट फ़ॉर प्राइमरी सेक्शन के लिए पाठ्यचर्या तैयार करने के लिए बुलाया गया था। यहाँ पेश की गई तस्वीरों का कोलाज लिली फूलों के तालाब को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है, जो उडवी स्कूल की इमारत की बनावट में एक अहम हिस्सा है।